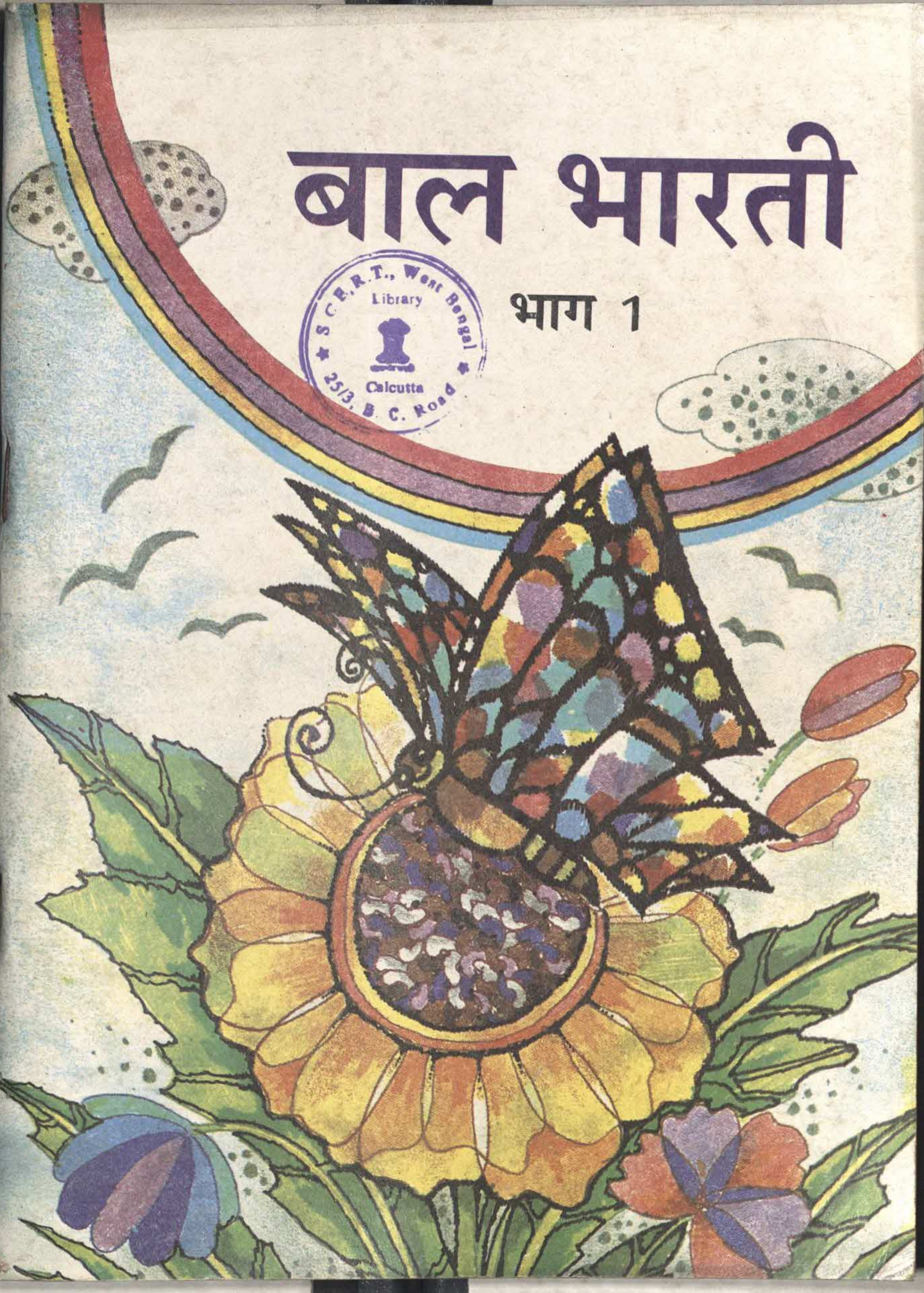
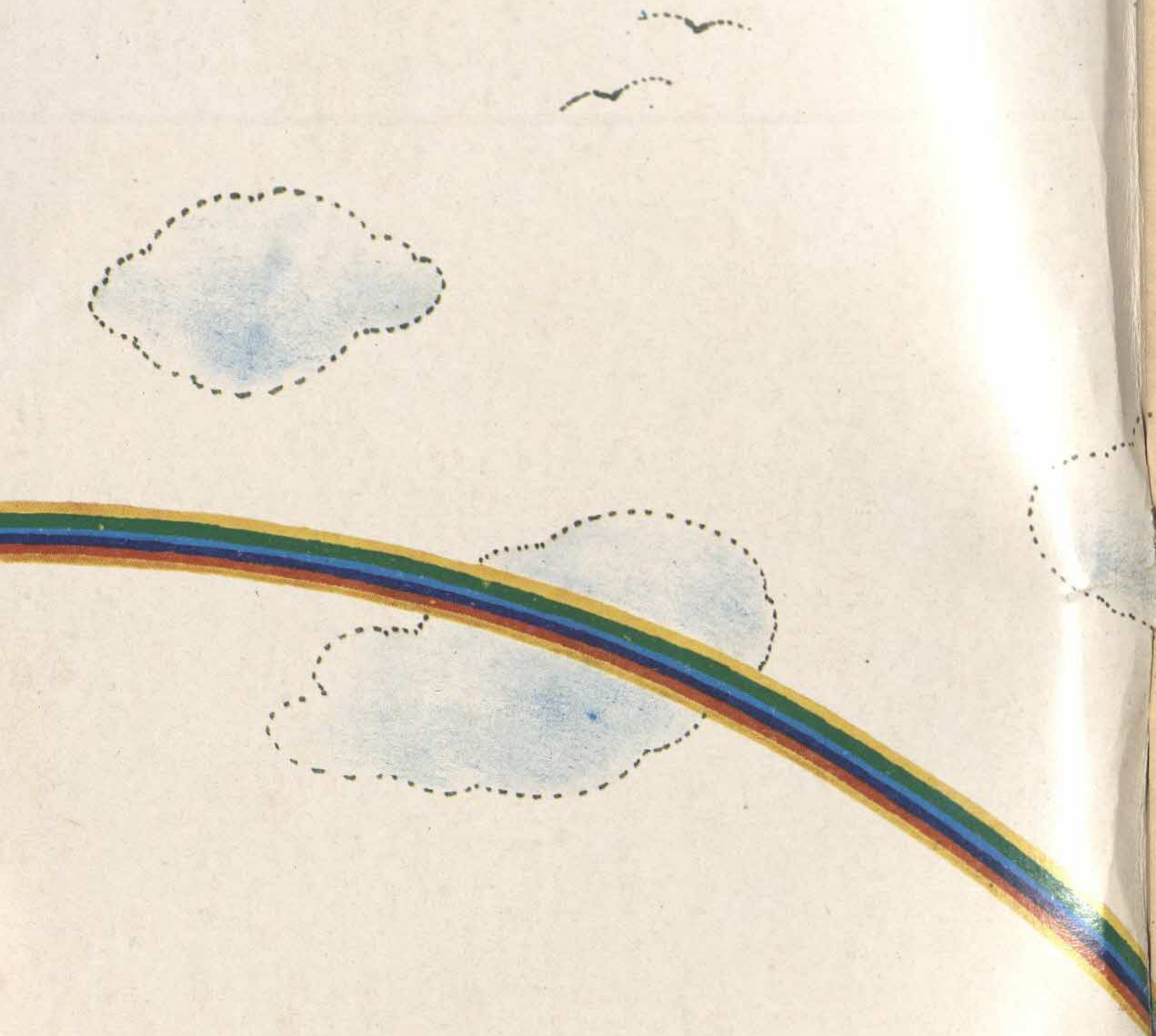
बाल भारती

भाग 1





बाल भारती

भाग 1



अनिल विद्यालंकार

संयुक्ता लूदरा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

मई 1987 : ज्येष्ठ 1909

P.D. 300T-DPS

प्रकाशन सहयोग

सम्पादन

प्रभाकर द्विवेदी *मुख्य सम्पादक*

दिनेश सक्सेना *सम्पादक*

शशि चड्ढा *संपादन सहायक*

उत्पादन

सी॰ एन॰ राव *मुख्य उत्पादन अधिकारी*

सुरेन्द्र कान्त शर्मा *उत्पादन अधिकारी*

चंद्र प्रकाश टंडन *कला अधिकारी*

टी॰ टी॰ श्रीनिवासन *सहायक उत्पादन अधिकारी*

राजेन्द्र चौहान *उत्पादन सहायक*

सज्जा सलाहकार

शान्तो दत्त

चित्रकार

मृणाल मित्र

मूल्य : रु. 9.20

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा गुप्ता प्रिंट्स, सी-57 साउथ एक्सटेंशन भाग 1 नई दिल्ली-110049 द्वारा कंपोज होकर मेहता आफसेट वर्क्स, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया फेज-II नई दिल्ली-110028 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 के प्रारंभ होने के साथ ही ऐसी शिक्षण-सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा जो इस नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इस नीति के अनुसार शिक्षा बाल-केन्द्रित होगी और बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाएगा। नई शिक्षा नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को "**केन्द्रिक शिक्षाक्रम**" के रूप में स्थान दिया गया है। यह एक क्रांतिकारी नीति है और यदि इसका पालन सही ढंग से किया जाए तो भारत के नव-निर्माण में इससे महत्वपूर्ण योगदान मिल सकेगा।

पहली कक्षा में हिन्दी पढ़ना सिखाने के लिए **बाल भारती भाग-1** का नया संस्करण इस शिक्षण-सामग्री की पहली कड़ी है। यह पुस्तक गत 12 वर्षों में परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग द्वारा पठन-शिक्षण के संबंध में किए गए प्रयोगों पर आधारित है। पुस्तक के निर्माण में पठन-शिक्षण से संबंधित सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इसे अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक देवनागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी की व्यवस्था में प्राप्त सुविधाओं पर आधारित है। प्रयत्न यह रहा है कि बच्चे कम से कम समय में अधिक से अधिक पठन-योग्यता का विकास कर सकें। इस पुस्तक के प्रयोग से "**केन्द्रिक शिक्षाक्रम**" के मूल्यों के संस्कार भी बच्चों में डालने में सहायता मिल सकेगी।

पुस्तक की कुछ विशेषताओं का वर्णन तथा इसके प्रयोग के लिए कुछ सुझाव आगे के पृष्ठों पर दिए हैं। अध्यापकों और अभिभावकों से इन पर ध्यान देने के लिए प्रार्थना है।

इस पुस्तक के साथ ही पढ़ने के लिए छोटी-छोटी अन्य पुस्तकें भी तैयार की जा रही हैं जो शीघ्र ही बच्चों को मिल सकेंगी। इस पुस्तक में प्रयोग की गई विधि से बच्चों की पढ़ना सीखने की गति बहुत तेज़ी से बढ़ती है इसलिए उन्हें प्रारंभ से ही अतिरिक्त पठन-सामग्री देना आवश्यक होगा। इस प्रकार की सामग्री का निर्माण अध्यापक स्वयं भी कर सकते हैं।

इस पुस्तक का निर्माण सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के प्रो॰ अनिल विद्यालंकार, श्रीमती संयुक्ता लूदरा और डा॰ सत्येन्द्रजीत वर्मा ने किया है। इसके प्रारूप पर विचार करने में अनेक शिक्षाविदों, भाषाविदों और अनुभवी अध्यापकों से सहायता मिली है। इन सबके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

पुस्तक के बारे में अध्यापकों की प्रतिक्रिया जानने और इसमें सुधार के लिए सुझावों का संकेत करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

नई दिल्ली

पी॰ एल॰ मल्होत्रा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

विषय-सूची

अध्यापकों के लिए संकेत

प्रवेशिका - निर्माण के प्रमुख आधार बिन्दु

1. यह प्रवेशिका हिन्दी-भाषी बच्चों को देवनागरी लिपि में हिंदी पढ़ना सिखाने तथा उनकी अन्य भाषा योग्यताओं का विकास करने के लिए तैयार की गई है। देवनागरी लिपि और हिंदी की वर्तनी-पद्धति में प्राप्त सुविधाओं का इस पुस्तक के निर्माण में पूरा-पूरा लाभ उठाया गया है तथा सभी आग्रहों से मुक्त रहकर पढ़ना सिखाने के लिए भाषा-वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक ऐसे मार्ग का अनुसरण किया गया है जो अपने देश की वर्तमान परिस्थिति में अध्यापकों को सहजग्राह्य हो और छात्रों के लिए रोचक तथा उपयोगी हो।

2. पहली कक्षा के प्रारंभिक दिनों में बालकों में बहुत अधिक झिझक होती है। प्रायः वे खुलकर बोल नहीं पाते। पढ़ने की प्रक्रिया उनके लिए बिलकुल नई चीज़ होती है इसलिए पुस्तक का प्रारंभ सीधे अक्षर ज्ञान से नहीं किया गया है। आरंभ में कुछ पशुओं, पक्षियों और सवारियों के चित्र दिए गए हैं जिनका उद्देश्य बच्चों का ध्यान पुस्तक पर केंद्रित करना तथा रोचक और उपयोगी बातचीत के लिए आधार प्रस्तुत करना है। इन चित्रों के बारे में बात करते हुए न केवल बच्चों की आँखें पुस्तक में छपी किसी चीज़ को देखने के लिए प्रशिक्षित होंगी अपितु पहली कक्षा के प्रारंभिक दिनों में छोटे बच्चों में जो स्वाभाविक झिझक होती है, वह भी बहुत कुछ दूर हो सकेगी।

3. इन चित्रों के बाद कुछ कहानियों के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक कहानी चार चित्रों में है जिनका क्रम बाईं ओर से दाईं ओर तथा ऊपर से नीचे है। हिंदी लिखने का भी यही स्वाभाविक क्रम है। कहानियों के इन चित्रों में क्रमिक घटनाएँ दिखाई गई हैं। चित्रों के नीचे उनके बारे में बच्चों से बातचीत करने के लिए कुछ संकेत दिए गए हैं। इन चित्रों के द्वारा बच्चों की रुचि सुनने और बोलने में और अधिक जगाई जा सकेगी। वे क्रमबद्ध वाक्य बोल सकेंगे। साथ ही उनकी आँख को बाईं ओर से दाईं ओर तथा ऊपर से नीचे की ओर जाने का भी अभ्यास हो सकेगा।

4. कहानियों के बाद दो पृष्ठों में कुछ सरल आकृतियाँ दी गई हैं, जिनका अनुकरण बच्चे पट्टी, स्लेट और कागज़ या रेत में कर सकते हैं। इससे बच्चों को जहाँ विभिन्न आकृतियों को पहचानने का अभ्यास होगा वहाँ उन्हें अपने हाथों पर नियंत्रण भी प्राप्त होगा। इन आकृतियों में वे सभी रेखाएँ भी आ गई हैं जिनके योग से देवनागरी के अक्षर बनते हैं। इस अभ्यास से बच्चे लिखना सीखने के लिए भली प्रकार तैयार हो सकेंगे।

5. पहली कक्षा के प्रारंभिक तीन-चार सप्ताहों में ऊपर लिखी क्रियाएँ व अभ्यास कराने के बाद ही अक्षर ज्ञान आरंभ कराना चाहिए। इस प्रवेशिका में पढ़ना सिखाने की जिस विधि का सहारा लिया गया है उसके प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं :

(क) हिन्दी के सभी लिपि-चिह्नों के प्रयोग की आवृत्ति समान नहीं है। **न, ल, ब, स, क, र, म, ल** आदि व्यंजनों का प्रयोग **छ, ठ, ण, ढ, ष** आदि की तुलना में कहीं अधिक होता है। स्वरों की तुलना में उनकी मात्राओं का प्रयोग कहीं अधिक है। बच्चों को यदि अधिक प्रयुक्त लिपि-संकेत पहले सिखाए जाएँ तो वे उनसे बनने वाले अधिकाधिक शब्दों को सरलता से पढ़ना सीख सकेंगे। प्रस्तुत प्रवेशिका में इस पद्धति का यथासंभव अनुसरण किया गया है।

(ख) प्रस्तुत पुस्तक में पहले बिना मात्रा वाले शब्द लिए गए हैं और फिर अधिक मात्राओं वाले। प्रवेशिका के अंत तक सभी स्वर, व्यंजन और मात्राएँ आ गई हैं। कुछ सरल संयुक्ताक्षर भी सिखाए गए हैं। लिपि-संकेतों को सिखाने का क्रम इस प्रकार रखा गया है कि बच्चे दूसरी कक्षा के अंत तक अपनी भाषा के सभी परिचित शब्दों को पढ़ने में समर्थ हो सकें। इससे वे तीसरी कक्षा में हिन्दी के अतिरिक्त विज्ञान, गणित व समाजिक अध्ययन की पुस्तक पढ़ने के लिए तैयार हो सकेंगे।

(ग) प्रवेशिका में उत्तरार्ध तक हिन्दी की पूरी वर्णमाला आ गई है और बच्चों के पहचानने और याद करने के लिए 77 पृष्ठ पर दी गई है। परिचित व्यंजनों के साथ, सीखी हुई मात्राओं के योग का क्रमिक अभ्यास साथ-साथ कराया गया है।

(घ) इस प्रवेशिका के सभी शब्द ऐसे हैं जिनसे विद्यालय में प्रवेश लेने से पूर्व हिन्दी-भाषी बच्चे प्रायः परिचित रहते हैं। इस प्रकार प्रवेशिका के शब्द, अर्थ की दृष्टि से, बच्चों के लिए नए नहीं हैं।

(ङ) एक पाठ में केवल तीन-चार नए लिपि-चिह्नों का परिचय कराया गया है। तीसरे पाठ से जो भी शब्द चित्रों के नीचे पढ़ने के लिए दिए गए हैं उनमें से प्रत्येक में केवल एक ही लिपि-चिह्न छात्रों के लिए अपरिचित है। प्रत्येक पाठ में सिखाए

गए नए लिपि-चिह्नों के योग से बनने वाले शब्दों को पढ़ने के अभ्यास के लिए दिया गया है। इस प्रकार सिखाए गए लिपि-चिह्न के योग से बनने वाले शब्दों और उन शब्दों के मेल से बनने वाले वाक्यों के पढ़ने की योग्यता का बच्चों में निरंतर विकास होता जाएगा। पिछले पाठों के शब्दों की अगले पाठों में आवृत्ति होती गई है जिससे छात्रों के पढ़ने में गति आएगी।

(च) जिन शब्दों से संकेतित वस्तुओं के चित्र बन सकते हैं, उनमें से कुछ के चित्र दिए गए हैं। इन चित्रों की वस्तुओं के नाम बच्चे नए शब्दों में से खोजेंगे। इस प्रकार शब्दों को पहचानने का उनका अभ्यास बढ़ेगा।

(छ) बच्चे प्रवेशिका के पहले भाग के अंत तक कई सौ शब्दों को पढ़ने की योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। पुस्तक के सीमित आकार में इन सभी शब्दों को नहीं दिया जा सकता किन्तु इन शब्दों के आधार पर लिखी गई सामग्री को बच्चे पूरक पठन के रूप में आसानी से पढ़ सकते हैं।

(ज) दूसरे पाठ से पढ़ने के साथ-साथ लिखने का अभ्यास भी प्रारंभ कराया गया है। शुरू में कुछ अक्षर लिखने के लिए दिए गए हैं, फिर कुछ शब्द और फिर कुछ वाक्य। प्रत्येक नए अक्षर को स्वाभाविक एवं सुगम चरणों के द्वारा लिखने की प्रक्रिया सुझाई गई है। लिखने का अभ्यास उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार पट्टी, स्लेट और कागज़ आदि पर कराया जा सकता है।

(झ) पुस्तक की भाषा प्रारंभ से अंत तक बच्चों के लिए सरल और स्वाभाविक है। पाठ ऐसे विषयों — घर, पास-पड़ोस, खेल-कूद, पशु-पक्षी आदि पर है, जिनमें छोटे बच्चों को स्वतः ही रुचि होती है। पाठों के प्रमुख पात्र बच्चों की ही उम्र के हैं। उनसे बच्चों का साधारणीकरण आसानी से हो सकेगा। पुस्तक के बहुत से पाठ संवादात्मक हैं, इससे बच्चों को मानक हिन्दी में बातचीत करने का अभ्यास भी सहज रूप से हो सकेगा।

(ञ) किसी भी भाषा की प्रवेशिका का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को पढ़ना सिखाना होता है, किन्तु पढ़ने की प्रक्रिया को भाषा की अन्य प्रक्रियाओं से अलग करके नहीं सिखाया जा सकता। पढ़ने के द्वारा बच्चों की सुनने, बोलने, लिखने और सोचने की योग्यताएँ भी विकसित होती हैं। पठन सामग्री के द्वारा अवांतर रूप से बच्चों में अच्छे गुणों का विकास भी किया जा सकता है। इस पुस्तक में ऐसे पाठ रखे गए हैं जिनसे बच्चों में सहायता, सहयोग, बाँट कर उपयोग करना, दया, सफ़ाई, शिष्टाचार, आज्ञापालन आदि गुणों का विकास करने में सहायता मिलेगी।

प्रवेशिका के प्रयोग के लिए कुछ सुझाव

1. बच्चों के लिए पाठशाला का वातावरण घर के वातावरण से बिलकुल भिन्न होता है। पहले उन्हें इस नए वातावरण में भली प्रकार जमने में सहायता दीजिए। उनसे उनके घर-परिवार, पास-पड़ोस, खेल-कूद आदि पर बातचीत कीजिए, कहानियाँ सुनाइए, पहेलियाँ बुझाइए और उचित अंग-संचालन के साथ समूह-गान गवाइए। इन क्रियाओं से बच्चों की झिझक दूर होगी। खेल-कूद भी इस दिशा में बहुत सहायता कर सकते हैं। एक सप्ताह इसी प्रकार का कार्यक्रम रखिए। इसमें पुस्तक का प्रयोग बिलकुल नहीं होगा।

2. बाद में बच्चों को प्रवेशिका के प्रारंभिक चित्रों पर लाइए। इनके बारे में बातचीत कीजिए। प्रत्येक बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। अगले दिन पक्षियों के बारे में बातचीत कीजिए और अंत में सवारियों के बारे में। यह देखिए कि बच्चे पुस्तक में चर्चित चित्र पर ध्यान दे रहे हैं या नहीं। चित्रों के नीचे उँगली रखवाइए फिर चित्र के किसी विशेष भाग, जैसे मोर की पूँछ, हाथी की सूँड़ या आँख पर उँगली रखवाइए। इससे बच्चे बड़ी से छोटी चीज़ पर क्रमशः ध्यान केन्द्रित करना सीखेंगे। कुछ और चीज़ों के चित्र दिखाकर उनके बारे में बातचीत कीजिए।

3. वस्तुओं के चित्रों के बाद कहानियों के चित्रों पर आइए। प्रश्नों द्वारा चित्रों की क्रमिक घटनाओं का वर्णन कराइए और उनका संबंध निकलवाइए। अंत में छात्रों से चित्रों के आधार पर कहानी सुनाने के लिए कहिए। आवश्यकतानुसार उनकी सहायता कीजिए। पुस्तक में पाँच कहानियों के चित्र हैं। यदि संभव हो तो कुछ अन्य कहानियों के चित्र कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। प्रयत्न कीजिए कि सभी बच्चे, ये कहानियाँ चित्र देखकर सुना सकें। इससे बोलने में उनकी झिझक दूर होगी और उनकी भाषा में प्रवाह आएगा।

4. हिन्दी भाषी प्रदेश के अधिकतर बच्चे घर पर मानक हिन्दी नहीं बोलते अपितु अपने-अपने क्षेत्र की बोलियाँ बोलते हैं। पढ़ना सिखाने के पूर्व चित्रों के आधार पर बातचीत करने और कहानियाँ सुनाने तथा कविताएँ याद कराने का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि बच्चे मानक हिन्दी के वाक्य-विन्यास से अनायास परिचय प्राप्त कर लें। आप अपनी ओर से खड़ी बोली का ही अधिकाधिक प्रयोग कीजिए ताकि बच्चे आपकी भाषा अनायास ग्रहण कर लें। खड़ी बोली में बोलने के लिए बच्चों को प्यार के साथ प्रोत्साहन

दीजिए। हाँ, यदि आवश्यकता हो तो आप बच्चों की बोली में भी कभी-कभी बोल सकते हैं ताकि उनसे अधिक आत्मीयता स्थापित हो सके।

5. जिन दिनों अक्षर-ज्ञान के पूर्व की ये क्रियाएँ चल रही हों, उन्हीं दिनों बच्चों को पृष्ठ 10 और 11 पर दी गई आकृतियाँ बनाने का अभ्यास भी प्रारंभ करा दीजिए। रेखाओं और आकृतियों की शुद्धता पर प्रारंभ से ही ध्यान दीजिए।

6. पढ़ने की प्रक्रिया का वास्तविक प्रारंभ प्रवेशिका के पृष्ठ 12 से होता है। इस पाठ में चार अक्षरों **ब, स, न** और **ल** का परिचय कराया गया है। पहले **ब** और **ल** का परिचय कराया गया है। पहले **ब** और फिर **ल** को श्यामपट पर लिखकर बार-बार पढ़वाइए। कार्डों पर बड़े आकार में अक्षर लिखकर उन्हें पढ़वाना उपयोगी होगा। अलग-अलग पढ़वाने के बाद दोनों अक्षरों को मिलाकर पढ़वाइए। फिर पाठ में छपे अक्षरों और **ब** और **स** पर बारी-बारी से उँगली रखवाइए। बस के चित्र के नीचे लिखे **बस** शब्द को पढ़वाइए। स्मरणीय है कि चित्र देखकर उसके द्योतक शब्द का उच्चारण करना पढ़ना नहीं है। यदि बच्चे बस का चित्र देखकर बस बोल रहे हैं तो वे पढ़ नहीं रहे हैं। बच्चों में शब्दों के पढ़ने की योग्यता तभी विकसित माननी चाहिए जब वे शब्दों को केवल लिखित रूप में देखकर ही पढ़ सकें, पढ़ने के लिए चित्र के सहारे की आवश्यकता न पड़े।

7. इस अभ्यास के बाद इन चार अक्षरों **(ब, स, न, ल)** के योग से बनने वाले उन नए शब्दों को पढ़ना सिखाइए जो सामने के पृष्ठ पर दिए गए हैं। उन्हें भी पहले श्यामपट पर लिखकर और बाद में कार्डों पर लिखा हुआ दिखाकर पढ़वाइए। कक्षा के प्रत्येक बच्चे से अलग-अलग पढ़वा कर देखिए। कमज़ोर बच्चों पर प्रारंभ से ही अधिक ध्यान दीजिए।

इन शब्दों से संबंधित चर्चा कीजिए ताकि पढ़ने के साथ-साथ सुनना, बोलना और सोचना भी चलता रहे और पाठ में रोचकता बनी रहे।

8. पढ़ने की प्रक्रिया की नवीनता के कारण बच्चों के लिए पहला पाठ सबसे कठिन होता है। यदि इसे पढ़ाने में चार-पाँच दिन भी लग जाएँ तो अधिक नहीं हैं। प्रत्येक पाठ में दी गई प्रत्येक बात को भली प्रकार सिखाकर ही आगे बढ़ें। हर अगला पाठ पिछले पाठों में सीखी हुई सामग्री पर आधारित है इसलिए पिछले पाठों में कोई कमी रह जाने पर अगला पाठ पढ़ने में बच्चों को कठिनाई होगी।

9. दूसरे पाठ से ही लिखने का अभ्यास भी प्रारंभ कराया गया है। प्रत्येक अक्षर को क्रमिक चरणों में लिखकर दिखाया गया है जिससे उसके लिखे जाने की प्रक्रिया स्पष्ट हो सकेगी। यदि बच्चों ने सरल आकृतियाँ बनाने का अभ्यास पहले कर लिया है तो उन्हें अक्षर लिखने में विशेष कठिनाई नहीं होगी। आगे चलकर बच्चों को देखकर लिखने के लिए शब्द दीजिए और कभी-कभी श्रुतलेख लिखवाइए। अक्षरों की शुद्ध और सुडौल बनावट पर बल दीजिए।

10. तीसरे पाठ में केवल दो लिपि-संकेतों का प्रवेश है **ा** और **त**। अभी यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह आ की मात्रा है। फिर **क** और **का** को अलग-अलग पढ़वाइए। बताइए कि यह **क** है और यह **का**। इसी प्रकार **न** और **ना, म** और **मा, ल, ला, त** और **ता** को कई बार अलग-अलग पढ़वाकर इनकी पहचान करवाइए। बाद में स्वरों का ज्ञान हो जाने पर आप बच्चों को बताएँ कि यह **आ** है और यह **ा** (आ की मात्रा) है आदि।

11. तीसरे पाठ में ही बच्चों द्वारा अब तक सीखे हुए लिपि-चिह्नों के आधार पर पढ़े जा सकने वाले परिचित शब्दों की संख्या इतनी हो गई है कि उन सब को पुस्तक में देना संभव नहीं रहा है। कहीं-कहीं पर पढ़े जा सकने वाले शब्दों की सूची साथ-साथ दे दी गई है। आगे के पाठों में पढ़ने के अभ्यास के लिए केवल उन शब्दों को चुना गया है जिनके द्वारा उस पाठ में सिखाए गए लिपि-चिह्नों का अच्छा अभ्यास हो सके। स्थान की सुविधा के अनुसार कुछ स्वतंत्र वाक्य भी दिए गए हैं जिनसे छात्रों के पढ़ने में अधिक गति आ सकेगी।

12. पाठ छह में मदन और कमला नाम के दो बच्चों का प्रवेश कराया गया है जिनको आधार बनाकर इस पाठ में तथा अगले पाठों में कुछ रोचक पठन-सामग्री का विकास किया गया है। इस पाठ में और आगे के सम संख्या वाले सभी पाठों में किसी नए लिपि-चिह्न का परिचय नहीं कराया गया है। ये पाठ पिछले सीखे हुए अक्षरों और शब्दों के पढ़ने के अभ्यास के लिए हैं। साथ ही इन पाठों में बच्चों से बात करने और उनके सोचने-विचारने के लिए काफ़ी सामग्री दी गई है। इन पाठों के आधार पर किस प्रकार की बातचीत बच्चों से की जा सकती है, इसके लिए कुछ नमूने के प्रश्न पाठों के नीचे दिए गए हैं। ऐसे बहुत से प्रश्न, बातचीत के आधार पर आप स्वयं तैयार कर सकते हैं।

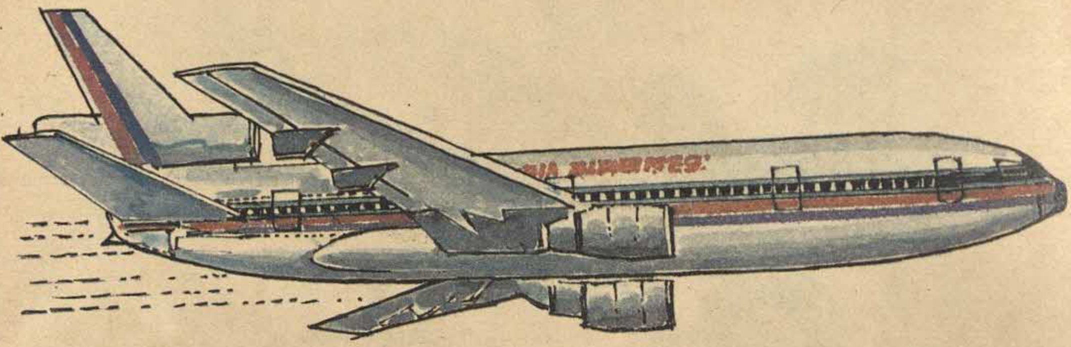
13. पढ़ने का अभ्यास कराने में कार्डों पर लिखे गए अक्षर और शब्द आपकी बहुत सहायता करेंगे। कम से कम शुरू के पाँच पाठों के प्रत्येक अक्षर और शब्द को कार्डों पर अवश्य ही मोटी कलम से लिख लीजिए। इनके प्रयोग से आप न केवल पढ़ने का अभ्यास अधिक अच्छी तरह करा सकेंगे अपितु छात्रों की बोध-परीक्षा भी सुगमतापूर्वक हो सकेगी।

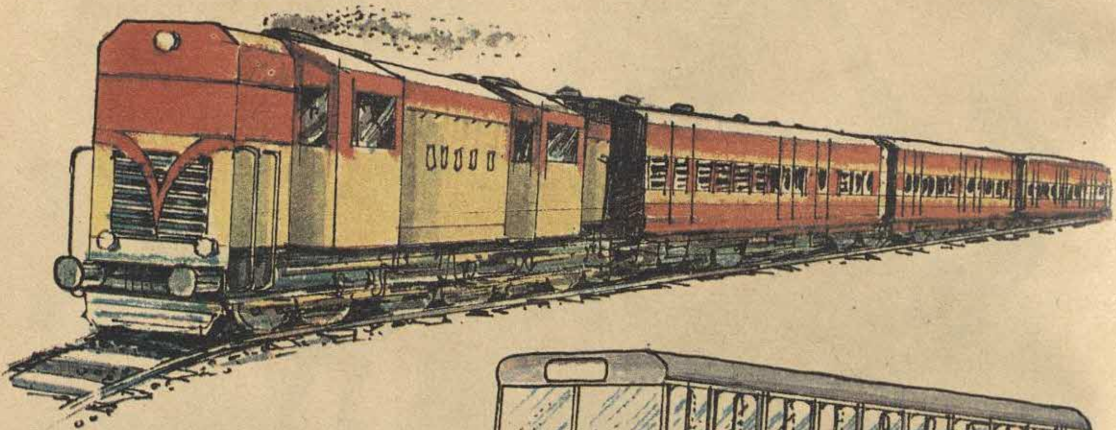


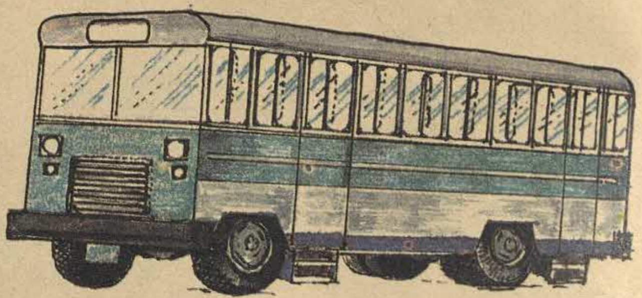
अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ परिचित पशुओं के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक पशु के चित्र पर उँगली रखवाइए, फिर उसके किसी एक अंग पर। जैसे, कहिए कि गाय की आँख पर उँगली रखो। इस अभ्यास का उद्देश्य छोटी चीज़ पर बच्चों का ध्यान केन्द्रित करना है। प्रत्येक पशु के बारे में कुछ प्रश्न पूछिए जैसे गाय हमें क्या देती है? हाथी के कान कैसे होते हैं? वह अपनी सूँड़ से क्या करता है? कुत्ता कैसे बोलता है? बिल्ली कैसे बोलती है? बकरी क्या खाती है? वह कैसे बोलती है? घोड़ा किस काम आता है आदि। इसी प्रकार कुछ अन्य पशुओं जैसे बंदर, शेर, भालू, ऊँट आदि के बारे में बातचीत कीजिए। किसी के घर में कोई पालतू पशु हो तो उसके बारे में बताने को कहिए।



अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ पक्षियों के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक चित्र पर तथा उसके किसी भाग पर बच्चों से उँगली रखवाइए। इन पक्षियों के बारे में कुछ बातचीत कीजिए। जैसे तोता किस रंग का होता है? उसकी चोंच किस रंग की होती है? वह क्या खाता है? कबूतर किस-किस रंग के होते हैं? वे कैसे बोलते हैं? कौआ किस रंग का होता है? वह कैसे बोलता है? मोर के पंख किस रंग के होते हैं? मोर कैसे नाचता है? मुरगी क्या देती है? बतख कहाँ रहती है? चित्रों की सहायता से कुछ अन्य पक्षियों जैसे चिड़िया (गौरैया), कोयल, बगुला, सारस, चील आदि के बारे में बातचीत कीजिए। किसी के घर में पालतू तोता हो तो उसके बारे में बताने को कहिए।



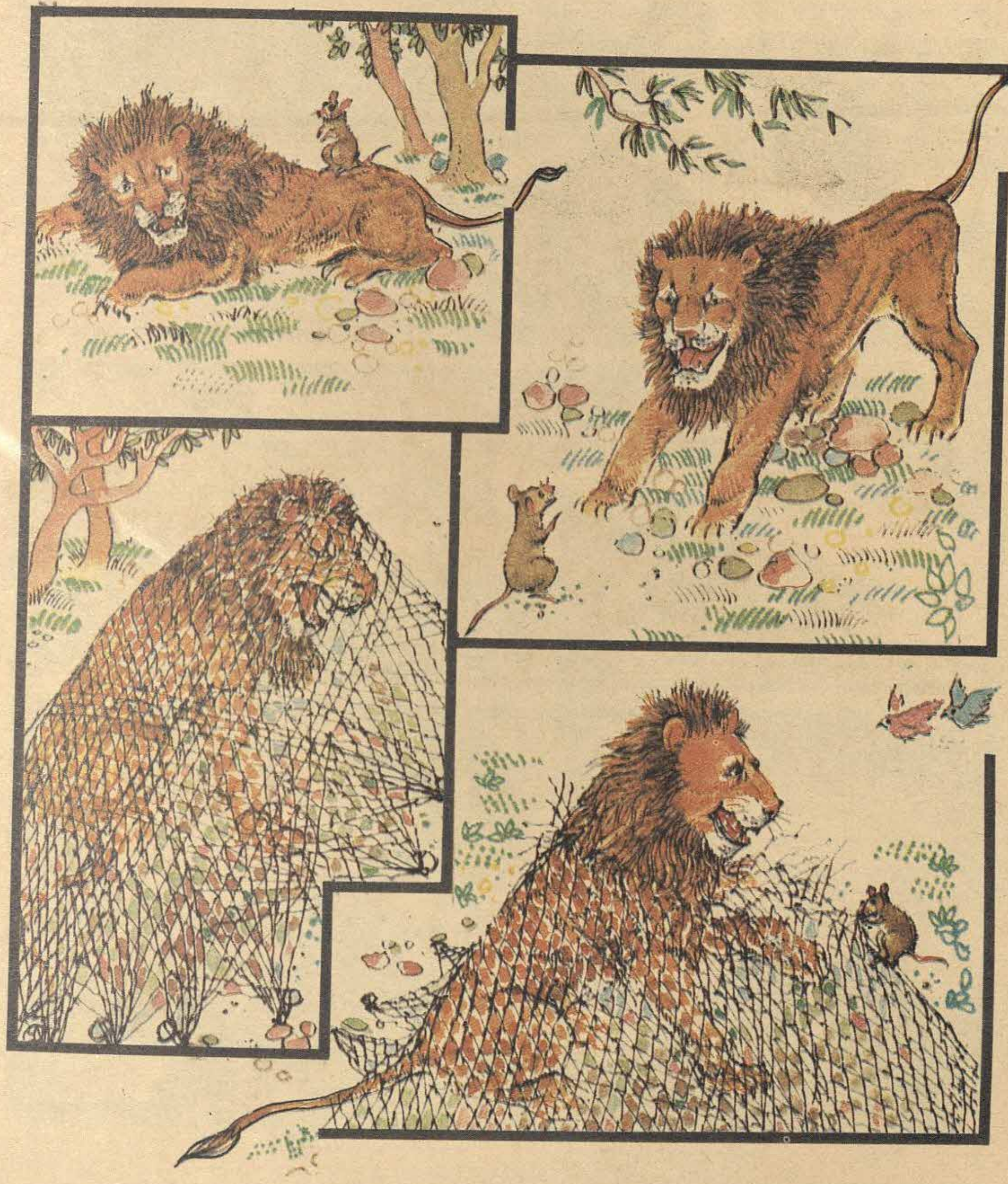




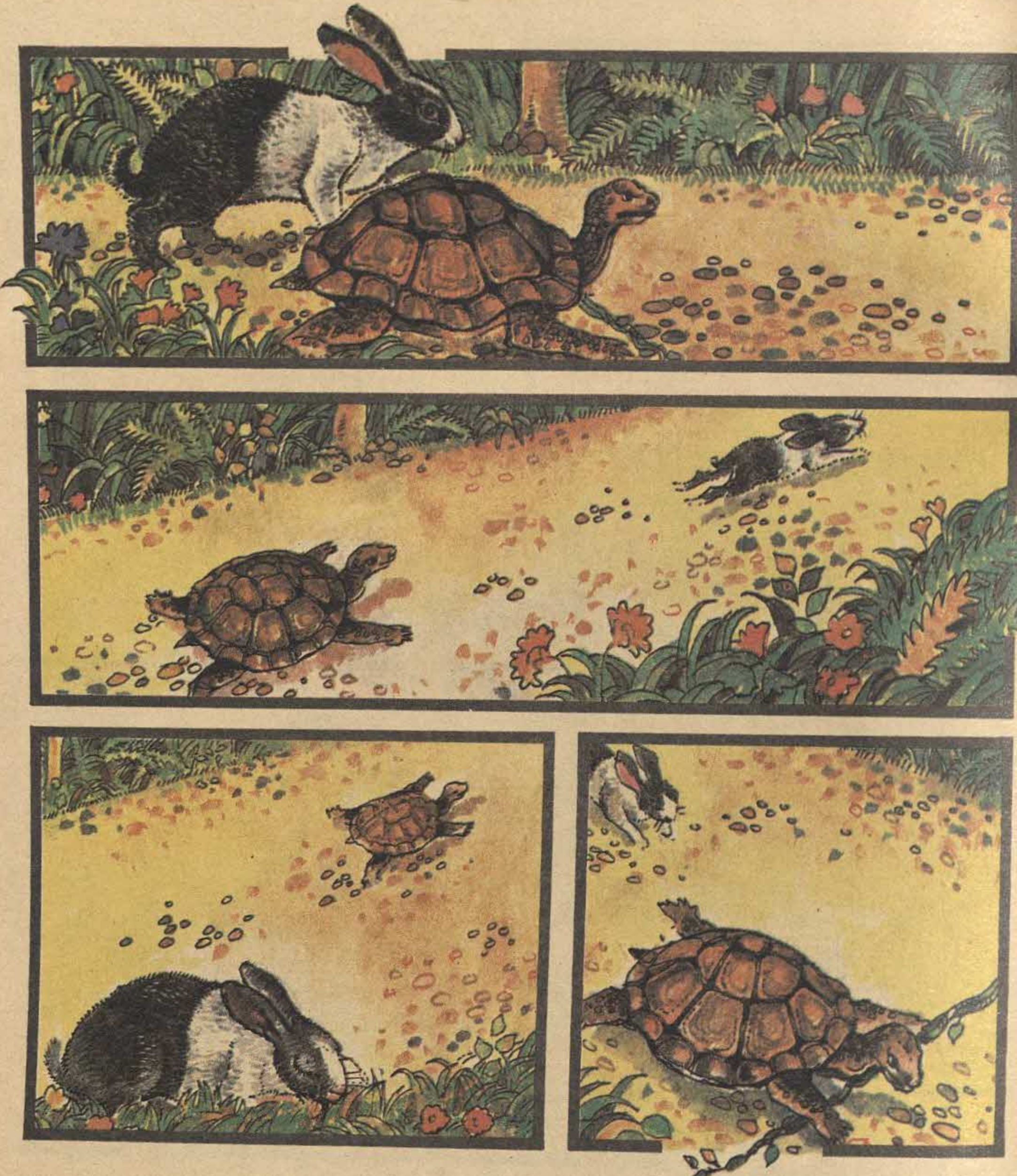




अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर कुछ सवारियों के चित्र दिए गए हैं। प्रत्येक चित्र पर ध्यान दिलाइए तथा उसके बारे में बातचीत कीजिए। जैसे तुम में से किस-किस के यहाँ साईकिल है? साईकिल किस काम आती है? तुम में से कौन-कौन बस में बैठा है? बस कौन चलाता है? रेलगाड़ी से सवारी किस-किस ने की है? तुम रेलगाड़ी से कहाँ गए थे? बैलगाड़ी कौन चलाता है? बैल और क्या-क्या काम करते हैं? ताँगा कौन खींचता है? तुम में से कौन-कौन तांगे में बैठा है? तुमने हवाई जहाज़ कहाँ देखा है? आदि। उनसे पूछिए कि इन सब सवारियों के निचले हिस्से में क्या चीज़ है? पहिये के बारे में बच्चों को बताइए। पानी का जहाज़, स्कूटर, मोटर गाड़ी, ट्रक, ट्रेक्टर के चित्र दिखाइए और उनके बारे में चर्चा कीजिए।



शेर और चूहे की कहानी : यह चार चित्र एक प्रसिद्ध कहानी के विषय में हैं। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए शेर के बारे में पूछिए। बच्चों ने शेर न देखा हो तो उसके बारे में बताइए। उसके दहाड़ने की नक़ल करवाइए। अब चूहे पर ध्यान दिलाइए और चूहों के बारे में प्रश्न पूछिए। इस चूहे के द्वारा शेर की नींद ख़राब होने के बारे में बताइए। दूसरे चित्र में पूछिए : शेर ने क्या किया। शेर और चूहे की बातचीत नाटकीय ढंग से प्रस्तुत कीजिए। तीसरे चित्र में शेर की दशा पर ध्यान दिलाइए। चौथे चित्र में चूहों द्वारा किए जाने वाले काम पर ध्यान दिलाइये। पूछिए : शेर ने चूहे की क्या भलाई की थी। उस भलाई का बदला चूहे ने कैसे चुकाया। जानवरों की कुछ और रोचक कहानियाँ सुनाइए। जैसे, 'शेर और खरगोश', 'हाथी और दरज़ी' आदि।



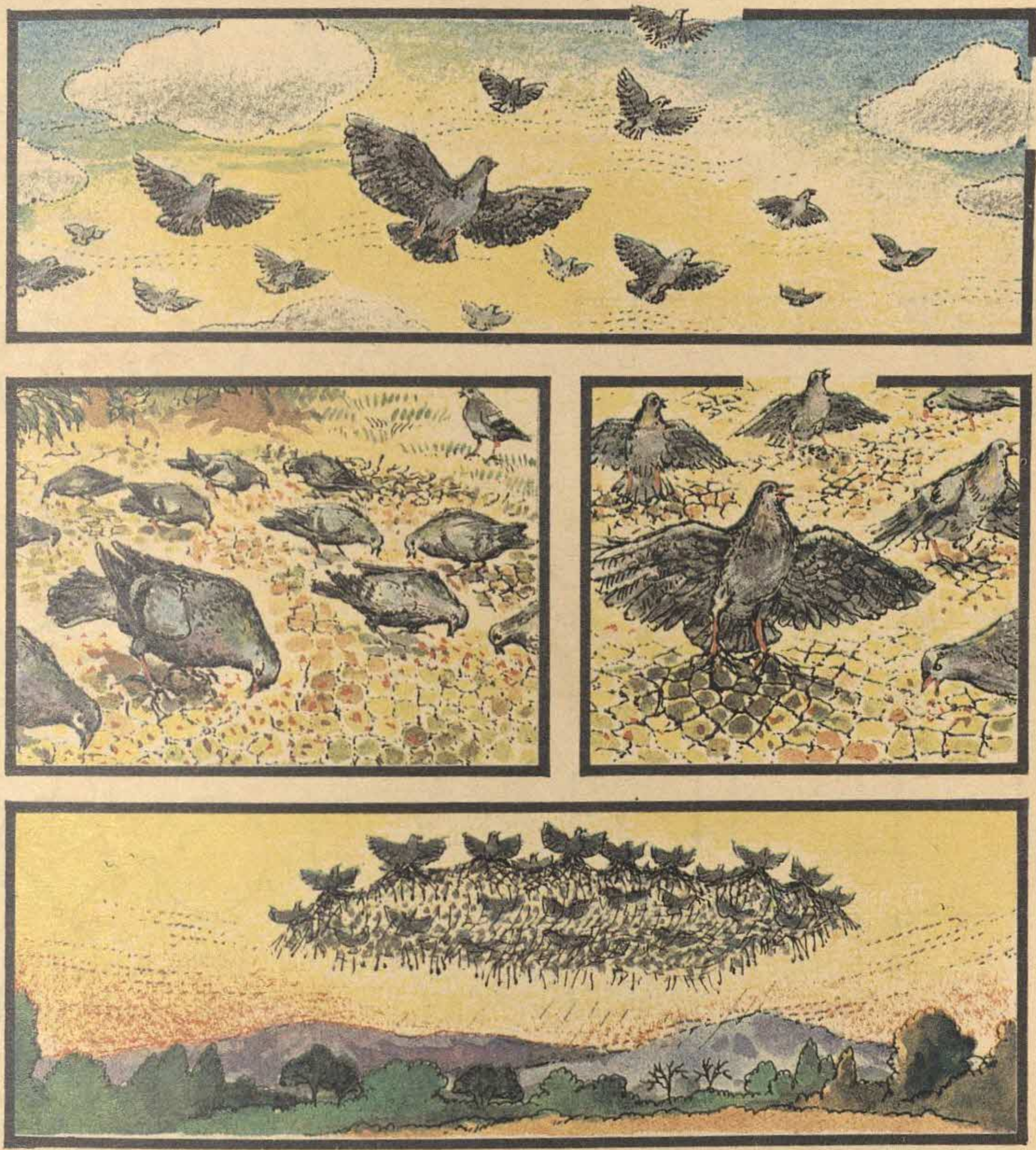
कछुआ और खरगोश की कहानी : यह भी एक प्रसिद्ध कहानी है। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए पूछिए : इस चित्र में कौन-कौन जानवर हैं। कछुआ और खरगोश क्या करने जा रहे हैं? दूसरे चित्र में कौन आगे है और कौन पीछे। तीसरे चित्र में खरगोश क्या कर रहा है? कछुआ क्या कर रहा है? बच्चों को बताइए कि खरगोश के सो जाने पर भी कछुआ चलता ही रहा। चौथे चित्र में पूछिए : खरगोश कहाँ है? कछुआ कहाँ है? इस दौड़ में कौन जीता? खरगोश क्यों नहीं जीत सका? बच्चों को बताइए कि कछुआ क्यों जीता। 'प्यासा कौआ' तथा 'टोपीवाला और बंदर' की कहानी बच्चों को सुनाइए।



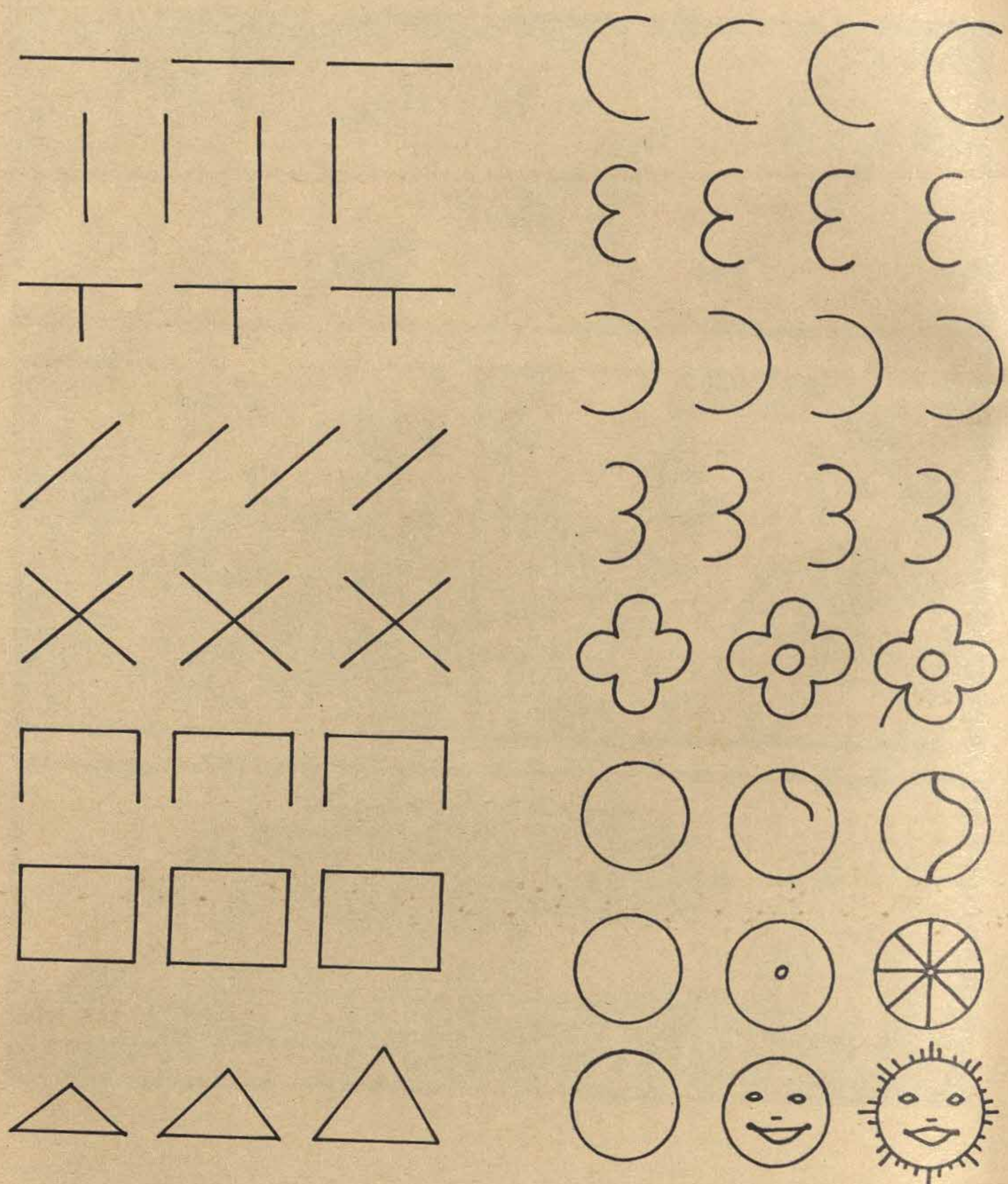
चालाक लोमड़ी की कहानी : ये चित्र भी एक प्रसिद्ध कहानी के बारे में हैं। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए प्रश्न पूछिए : यह किसका चित्र है? कौए की चोंच में क्या है? वह रोटी कहाँ से लाया? रोटी लेकर वह कहाँ जा रहा है? अब दूसरे चित्र पर बच्चों का ध्यान दिलाइए। पूछिए : रोटी लेकर कौआ कहाँ बैठ गया? देखो इस चित्र में पेड़ के नीचे कौन आ गया? अधिकतर बच्चों ने लोमड़ी नहीं देखी होगी इसलिए उसके रंग-रूप के बारे में बताइए। पूछिए कि लोमड़ी क्या चाहती थी? फिर बताइए कि चालाक लोमड़ी ने कौए की तारीफ़ की और कहा, "कौए भाई! तुम तो बहुत अच्छा गाते हो। आज कोई गाना सुनाओ।" पूछिए कौए ने गाना गाने के लिए क्या किया? कौए के गाना सुनाने से क्या हुआ? अंतिम चित्र पर ध्यान दिलाते हुए कहानी समाप्त कीजिए। पूछिए कौए ने रोटी क्यों खो दी। बच्चों से इस कहानी को दुहराने को कहिए और इसका अभिनय करवाइए।



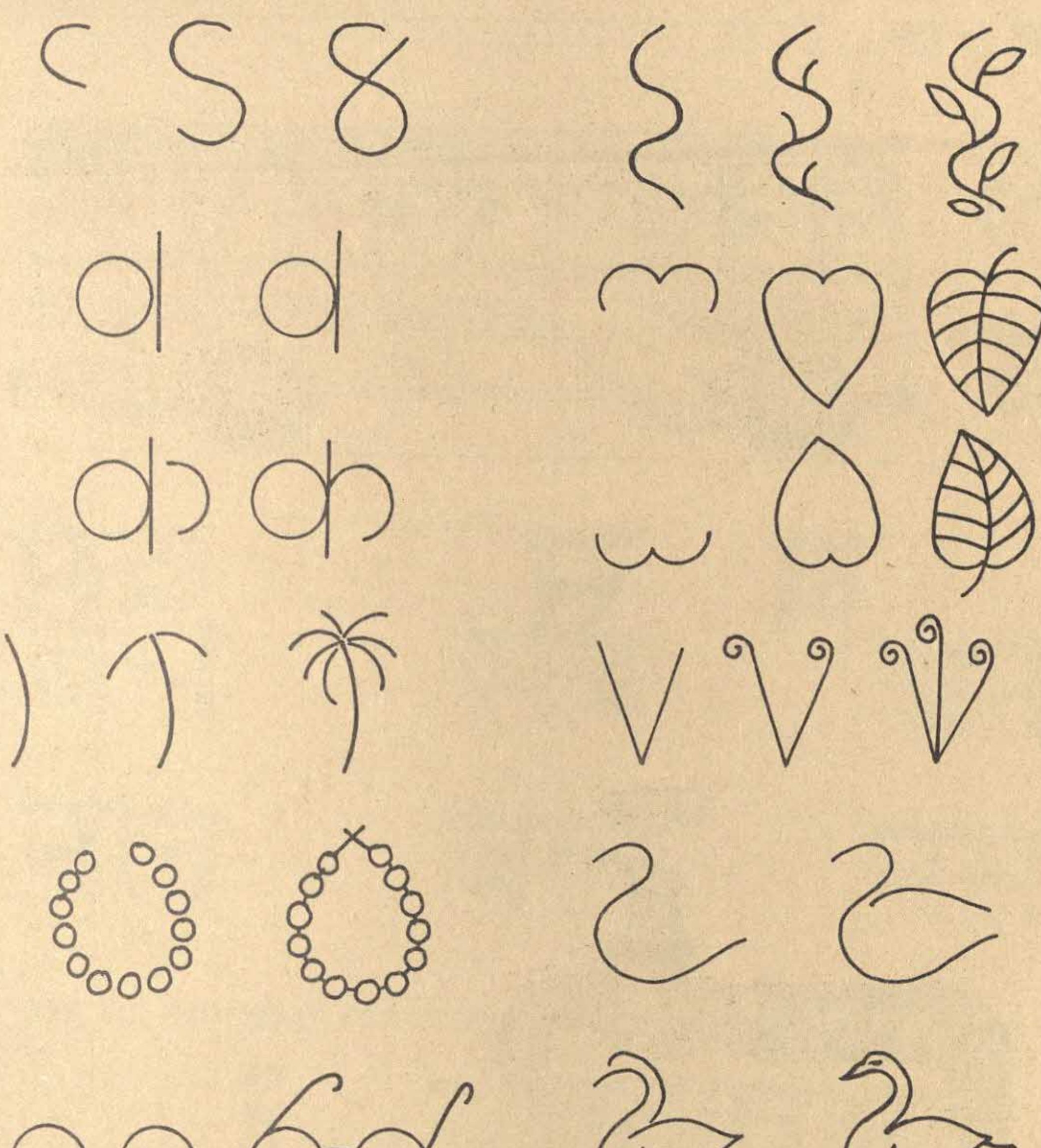
हाथी और दरज़ी की कहानी : यह भी एक प्रसिद्ध कहानी है। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए पूछिए : चित्र में कौन-सा जानवर है? यह दुकान किस की है? बताइए कि हाथी जब नदी पर नहाने के लिए जाता था तो रास्ते में दरज़ी की दुकान पड़ती थी और दरज़ी रोज़ उसे एक केला देता था। दूसरे चित्र में ध्यान दिलाइए कि दरज़ी के स्थान पर उसका लड़का बैठा है और फल देने के बजाए हाथी की सूँड़ में सुई चुभो रहा है। तीसरे चित्र में पूछिए कि हाथी यहाँ क्या कर रहा है। बताइए कि हाथियों को नदी में नहाना बहुत अच्छा लगता है। वे सूँड़ में पानी भर-भर कर अपनी पीठ पर उँड़ेलते हैं। अब चौथे चित्र पर आते हुए पूछिए कि यह कहाँ का चित्र है। हाथी यहाँ क्या कर रहा है? वह पानी कहाँ से लाया? हाथी ने दरज़ी के लड़के को पानी से क्यों भिगो दिया? बताइए कि हमें जानवरों से प्यार करना चाहिए, उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। पशुओं के बारे में कुछ और कहानियाँ बच्चों को सुनाइए। जैसे, बंदर और टोपीवाला, कछुआ और खरगोश आदि।



कबूतर और जाल की कहानी : बच्चों को बारी-बारी एक-एक चित्र दिखाते हुए कहानी का विकास कीजिए। पहले चित्र पर ध्यान दिलाते हुए पूछिए : इस चित्र में कौन पक्षी हैं। वे क्या कर रहे हैं? दूसरे चित्र में वे ज़मीन पर क्यों चले गए? वहाँ वे क्या कर रहे हैं? तीसरे चित्र में दाना चुगने के बाद कबूतरों की दशा की ओर संकेत करते हुए बच्चों से पूछिए : क्या वे उड़ सकेंगे। थोड़ी दूर बैठा बूढ़ा कबूतर उन्हें क्या कह रहा है? चौथे चित्र के बारे में पूछिए : अब क्या हुआ। कबूतर कैसे उड़ गए? पूरी कहानी सुनाकर बच्चों को बताइए कि मिलजुल कर काम करने से सभी काम आसानी से हो जाते हैं।

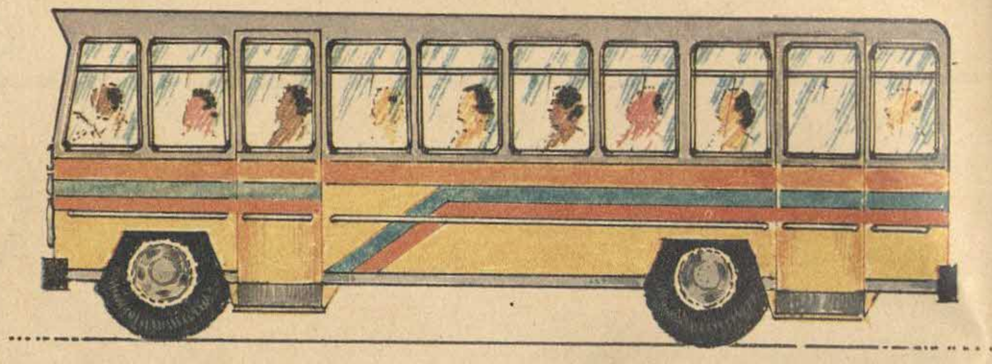


अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर रेखांकन के अभ्यास के लिए कुछ आकृतियाँ दी गई हैं जो क्रमशः सरल से जटिल होती जाती हैं। इस अभ्यास का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को लिखने के लिए तैयार करना है। इन आकृतियों का अभ्यास स्लेट, पट्टी या कागज़ पर कराया जा सकता है। बालू में उँगली या तीली की सहायता से भी ये आकृतियाँ बनवाई जा सकती हैं। पहले सरल आकृतियों के नमूने काफ़ी बड़े आकार में श्यामपट पर स्वयं बना कर दिखाइए, तब बच्चों से बनाने को कहिए। बच्चों में गति-नियंत्रण की कुशलता के विकास के लिए उन्हें स्नेह से प्रोत्साहित कीजिए, जिससे बच्चे बार-बार आकृतियाँ बनाएँ तथा उँगलियों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकें। एक आकृति के अभ्यास के बाद दूसरी आकृति लीजिए।

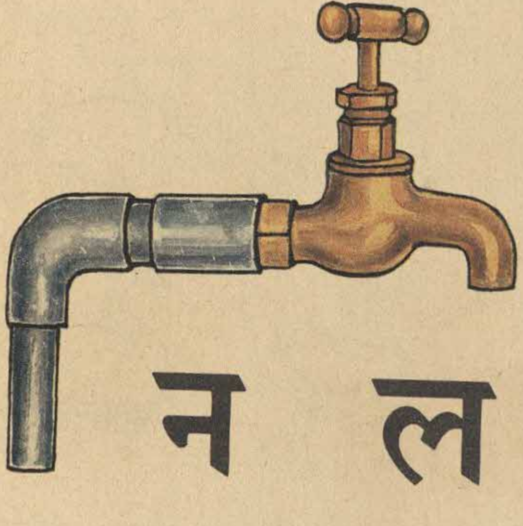


अध्यापन संकेत : इस पृष्ठ पर अपेक्षाकृत कुछ जटिल आकृतियाँ हैं जो पिछले पृष्ठ की आकृतियों के अभ्यास के बाद ली जा सकेंगी। यदि बच्चों के पास रंग हैं तो रंग भरने को भी कहा जा सकता है। इन आकृतियों को बनवाने का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को धीरे-धीरे देवनागरी के अक्षरों की आकृतियों की ओर लाना है। अभी उन्हें किसी अक्षर का नाम न बताइए, केवल ये आकृतियाँ श्यामपट्ट पर बनाकर उनकी कई बार नकल करने के लिए कहिए। रेखाओं को मिलाकर कुछ अन्य नमूने भी अभ्यास के लिए दिए जा सकते हैं। इस तरह का अभ्यास करने के बाद बच्चे आसानी से लिखना सीख सकेंगे। प्रारम्भ से ही प्रत्येक बच्चे पर अलग-अलग ध्यान दीजिए। जिन बच्चों को दाएँ और बाएँ का अंतर करने में कठिनाई हो अथवा जिनमें गति-नियंत्रण का अभाव हो, उनकी विशेष सहायता कीजिए।

पाठ — एक



ब स बस



न ल नल

अध्यापन संकेत : इस पाठ से बच्चों का अक्षर-ज्ञान प्रारंभ हो रहा है। पहले **ब** और **स** अक्षरों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। यदि आप इन दोनों अक्षरों को कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखकर बच्चों को बाँट सकें तो बहुत अच्छा रहेगा। फिर निर्देश दीजिए — सब बच्चे **ब** उठाकर दिखाएँ, अब **स** दिखाएँ, आदि। **ब** और **स** को मिलाकर पढ़वाइए — बस। अब बस के चित्र पर ध्यान दिलाते हुए, उसके बारे में बात कीजिए। बच्चों से पूछिए : उनमें से कौन-कौन बस में चढ़े हैं? अब कहिए कि बस के चित्र के नीचे उसका नाम लिखा है — बस। इसी प्रकार न और ल अक्षरों को अलग-अलग और फिर मिलाकर पढ़वाइए। नल के चित्र के नीचे उसका नाम लिखा है — नल। दोनों शब्दों को ऊँची आवाज़ में कई बार बुलवाइए।

पहचानो

ब   स   न   ल

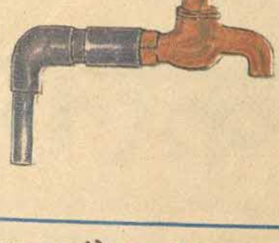
स   ल   न   ब

पढ़ो

बस   सब   बन

नल   बल   नस

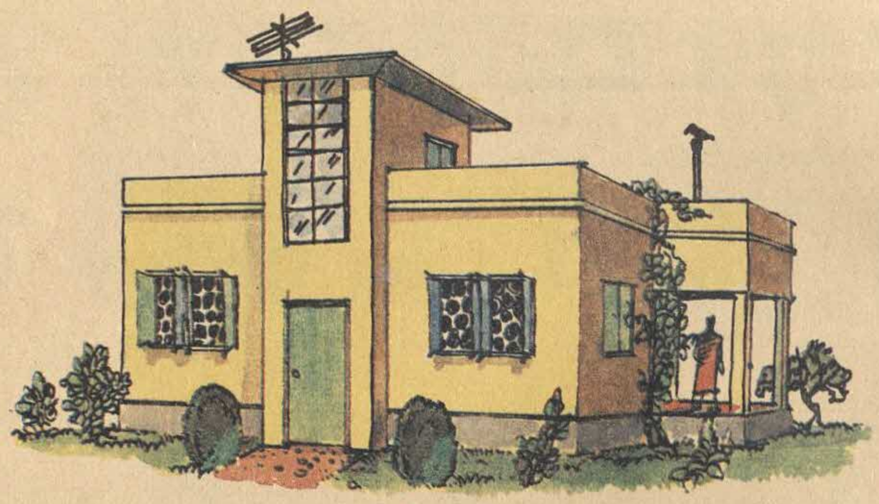
इनके नाम ऊपर खोजो



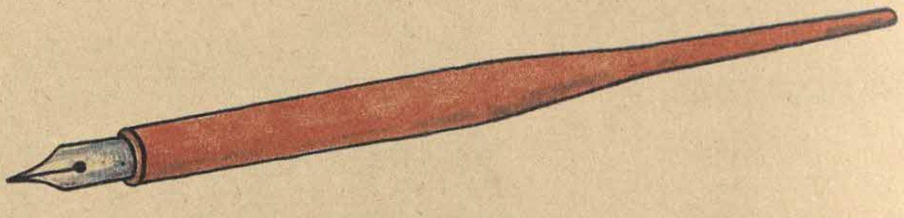


अध्यापन संकेत : चारों अक्षर श्यामपट पर लिखकर बारी-बारी से बच्चों को बुलाकर पहचान करवाइए। जब बच्चा सही बताए तो कक्षा से प्रशंसा में ताली बजवाइए। इसी प्रकार **बस** और **नल** शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से बार-बार पढ़वाइए। बच्चों से ऊँची आवाज़ में सामूहिक रूप से तथा अलग-अलग बुलवाइए — **ब-ब-ब, स-स-स, न-न-न, ल-ल-ल**। इससे इन ध्वनियों पर बच्चों का ध्यान जाएगा और उच्चारण की शुद्धता बढ़ेगी। इन चारों अक्षरों के योग से बनने वाले नए शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। **बस** के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। देखिए कि कुछ बच्चे **बश** या **बछ** तो नहीं बोल रहे हैं।

पाठ — दो



घ र घर



क ल म कलम

अध्यापन संकेत : पिछले पाठ की तरह ही पहले **घ** और **र** को अलग-अलग और फिर मिलाकर पढ़वाइए। बताइए कि **घर** के चित्र के नीचे उसका नाम लिखा है। फिर **क, ल** और **म** अक्षरों को श्यामपट और कार्डों पर से अलग-अलग पढ़वाइए। फिर **क, ल, म** तीनों अक्षरों को मिलाकर **कलम** शब्द पढ़वाइए। अब घर के बारे में चर्चा कीजिए। बताइए कि लोग अलग-अलग तरह के घरों में रहते हैं। कुछ उदाहरण दीजिए व चित्र दिखाइए। कलम के बारे में बात कीजिए। अब पिछले पाठ के शब्दों और अक्षरों में मिलाकर इनकी पहचान करवाइए।

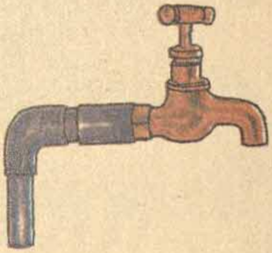
पढ़ो

घर कर कब कम

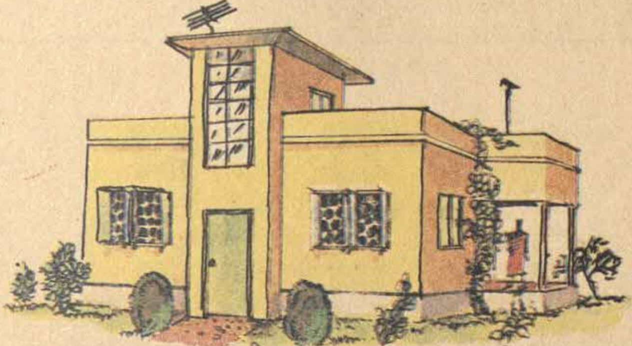
मन नल बस रस

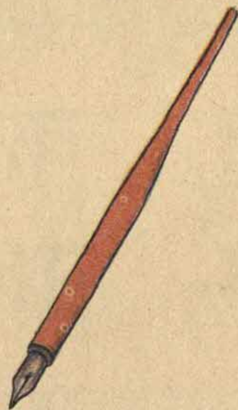
कलम नमक कमल

इनके नाम ऊपर खोजो









अध्यापन संकेत : सभी शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। रस और नमक के बारे में बात कीजिए। बच्चों से उन शब्दों को पढ़ने को कहिए जिनमें क अक्षर आया हो। इसी प्रकार अन्य अक्षरों वाले शब्दों को चुनने को कहिए। इससे बच्चे शब्द के प्रारम्भ, मध्य और अंत में किसी विशेष अक्षर को पहचान सकेंगे। इस पाठ से लिखने का अभ्यास भी प्रारम्भ हो रहा है। कलम, स्लेट, बत्ती और पेंसिल के पकड़ने तथा बैठने का सही ढंग छात्रों को बताइए। श्यामपट पर पहले एक अक्षर को क्रमिक खंडों में पूरा लिखिए। फिर छात्रों से वैसा ही लिखने को कहिए। एक अक्षर का अभ्यास हो जाने पर दूसरा अक्षर लीजिए।

पाठ — तीन

क का न ना त ता



कान







नाक

माला

ताला

पहचानो

त क र घ म स

न ना ब बा र रा

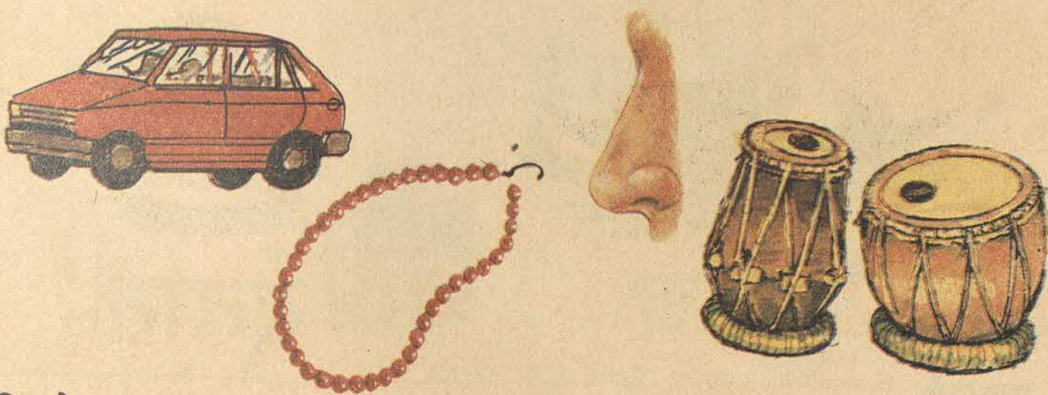
पिछले पाठों की तरह इन शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। फिर क और का, न और ना, म और मा, त और ता को अलग-अलग इतनी बार पढ़वाइए कि बच्चे इन्हें अलग-अलग पहचान सकें। इन जोड़ों की ध्वनियों का स्पष्ट उच्चारण करना सिखाइए। अभी यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि ा आ की मात्रा है। केवल उसे पहचनवाकर उसका सही उच्चारण करना काफ़ी है।

बच्चों से अपने कानों पर हाथ रखने को कहिए। फिर नाक पर। फिर जल्दी-जल्दी इन शब्दों को बदल-बदल कर बोलिए और छात्रों को शब्द के अनुसार हाथ रखने को कहिए। कभी-कभी उसी शब्द को दुहरा दीजिए। इससे छात्र शब्दों की ध्वनियों पर ध्यान देना सीखेंगे। माला और ताले के बारे में बात कीजिए। कुछ बच्चे घर से माला बनाकर भी ला सकते हैं।

पढ़ो

रात नाक कान घास
तारा माला कार लाल
कमरा बालक बारात तबला
काम कर। माला बना।

इनके नाम ऊपर खोजो



लिखो

त त त र स स स
ब ब क त ल ल ल
र रा रा म मा मा

इन शब्दों को श्यामपट और कार्डों पर से पढ़वाइए। **ल, स, क, त** अक्षरों वाले शब्दों को क्रमशः चुनने के लिए कहिए। इन ध्वनियों से शुरू होने वाले कुछ और शब्द बनाने को कहिए। तारा, तबला, घास आदि के बारे में बात कीजिए, लाल और अन्य रंगों की चीज़ें दिखाने को कहिए। ध्यान रखिए कि बालक शब्दों के नीचे दिए गए वाक्यों को रट करके स्मृति से न बोलने लगें। **र** और **स** की बनावट में संबंध स्पष्ट कीजिए।

पाठ-चार

ह　　　च　　　द　　　व



हल



चाक





नाव

दवात

पहचानो

व　　　च　　　द　　　ह

दा　　　वा　　　हा　　　चा　　　ता

सा　　　घा　　　बा　　　ला　　　का

पहले ह और च अक्षरों को अलग-अलग और फिर शब्दों में मिलाकर पढ़वाइए। इसी प्रकार द और व अक्षरों को श्यामपट और कार्डों पर से बार-बार पढ़वाइए। ब और व को बार-बार सही बुलवाकर उनका अन्तर स्पष्ट कीजिए।

चित्रों के बारे में चर्चा कीजिए। हल और चाक किस काम आते हैं? दवात किस काम आती है? बच्चों को नाव के बारे में बताइए। ह, च, द, व को श्यामपट पर लिखकर तथा कार्डों से पढ़वाइए।

पढ़ो

हम दवा चमचा नाच हरा
दवात वन नाव बहन चावल
घर चल। कहना मान।

इनके नाम ऊपर खोजो







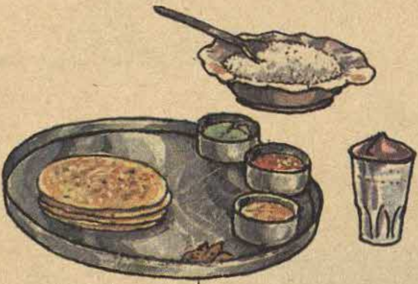
लिखो

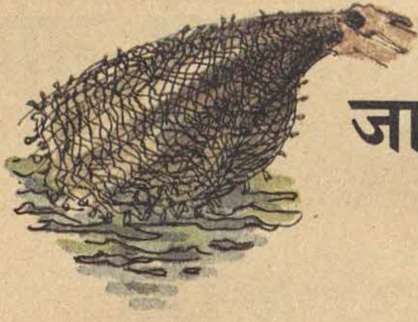
व व च च
ध ध द द
का ला चा दा वा घा हा

सभी शब्दों को पढ़वाइए। उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें **ह, च, द, व** अक्षर हैं। हवा, हरा, चना, चल, दस, दाल, दाना, दादा, वह, घाव, तवा, दवात आदि शब्द श्यामपट पर लिखकर पढ़वाइए। पूछिए: बच्चे कौन-कौन सी दालें खाते हैं? दवा की ज़रूरत कब पड़ती है? दवा कहाँ मिलती है? लिखने में **ब** और **व** में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

ख ज अ क के र रे

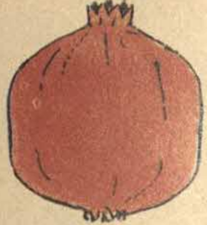
खाना

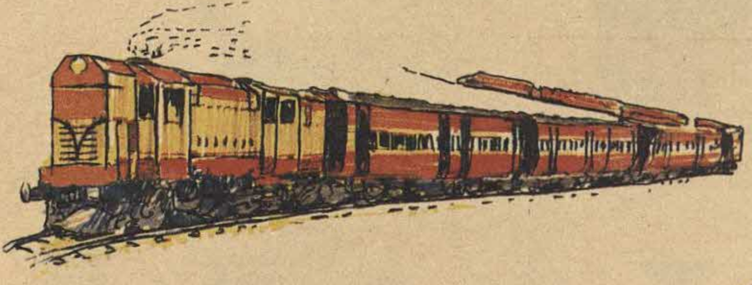




जाल

अनार





रेल



केला

नए लिपि-चिह्नों की पहचान कराइए। ध्यान दीजिए कि नई पद्धति के अनुसार **ख** में र और व नीचे से जुड़े रहते हैं। **अ** और व नीचे के जुड़े रहते हैं। **अ** का केवल यही स्वरूप मान्य है। **र** और **रे** तथा **क** और **के** का बार-बार उच्चारण कराकर े का प्रयोग स्पष्ट कीजिए अभी यह न कहिए कि यह ए की मात्रा है। **पहचानो** अभ्यास कराइए। पाँचों नए शब्द श्यामपट और कार्डों पर लिखकर पढ़वाइए। इन चीज़ों के बारे में बात कीजिए। हमारे खाने में आमतौर से क्या-क्या चीजें होती हैं? बच्चों ने जाल न देखा हो तो उसके बारे में बताइए रेल की सवारी किस-किस ने की है? रेल कैसे चलती है? केले और अनार के चित्र बनवाइए।

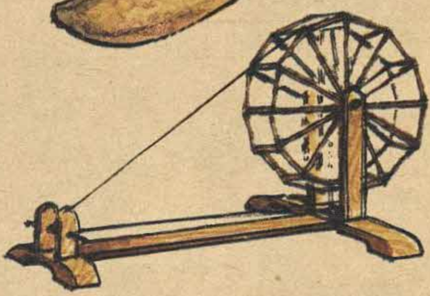
पढ़ो

जल बना सेब अब अमर
अनार खेल अदरक रेल खेत
चरखा मेला करेला जेब सवेरा
केला केलेवाला बाजा बाजेवाला

इनके नाम ऊपर खोजो







लिखो

ख ज अ ने के रे
बस नल चल अनार

सभी शब्द श्यामपट पर लिखकर तथा कार्डों की सहायता से पढ़वाइए। बाजा, अनार, खेल, रेल, खेत, जेब, मेला, तथा बाजे वाले के बारे में चर्चा कीजिए। उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें **ज, ख, अ** अक्षर आए हों। फिर, **ब, ल, र** अक्षरों वाले शब्दों को चुनवाइए। पूछिए कि वे कौन-से शब्द हैं जिनमें **मे, के, रे** की आवाज़ है। नए अक्षरों को क्रमिक रूप से लिखने का अभ्यास कराइए। **ख** के लिखने में **र** और **व** के ज्ञान की सहायता लीजिए। ध्यान दीजिए कि **ख** नीचे से जुड़ा हो। इस पाठ में अक्षरों को लिखने के लिए विभिन्न सोपान नहीं दिए गए हैं। उन्हें स्वयं करवाइए। इस पाठ से शब्दों के लिखने का अभ्यास आरंभ किया गया है। शब्दों को लिखते समय अक्षर पास-पास हों और उनकी शिरोरेखा जुड़ी हो।

मेला



मदन, मेले चल।
देर मत कर।
कमला, मेले चल।
देर मत कर।



देख, मेला देख।
कमला, मेला देख।
अरे, वह बाजेवाला।
बाजेवाले, बाजेवाले,
बाजा दे।

यह पाठ सीखे हुए शब्दों और अक्षरों के पढ़ने के अभ्यास के लिए है। इसमें किसी नए लिपि-संकेत का प्रयोग नहीं किया गया है। मदन और कमला नामक दो बच्चे जो भाई बहन हैं, पिताजी के साथ मेले गए हैं। मदन लगभग दस वर्ष का है और कमला छह वर्ष की। ये दोनों पात्र आगे के कई पाठों में आएँगे। बच्चों से मेले के बारे में चर्चा कीजिए। मेले में तुमने क्या-क्या देखा? क्या किया? और वहाँ से क्या लाए? आदि।



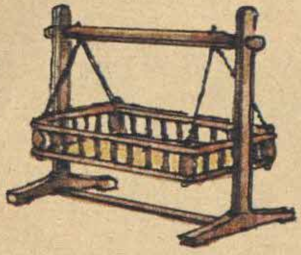
वह बाजा दे ।
कमला, बाजा बजा ।
मालावाले, यह माला दे ।
लाल माला दे ।
कमला, लाल माला ले ।

अरे, देख केलेवाला ।
मदन, देख, केलेवाला ।
केलेवाले, केले दे ।
चार केले दे ।
ले कमला, केला खा ।
मदन, केला खा ।

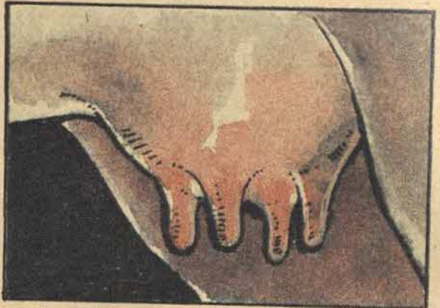
पाठ को बारी-बारी सभी बच्चों से ऊँची आवाज़ में पढ़वाएं। इसमें कोई शब्द नया नहीं है, इसलिए यदि बच्चों ने पिछले पाठ भली प्रकार सीख लिए हैं तो उन्हें इसके पढ़ने में कठिनाई नहीं होगी। उनकी गलतियाँ लिख लीजिए ताकि आप उनके निवारण पर विशेष ध्यान दे सकें। जिन वाक्यों के बीच में अधिक स्थान छोड़ा गया है वहाँ बातचीत का प्रसंग बदल गया है। ध्यान दिलाइए कि कमला छोटी है इसलिए उसे खिलौना और केला पहले मिला। हमें अपने से छोटों को पहले चीज़ देनी चाहिए, यह भाव बच्चों के मन में बिठाइए।

पाठ-सात

प थ म मो त तो



पालना



थन



तोता



मोर

पहचानो

प	थ		मो	तो
पा	था	जा	सो	रे
दो	लो	खो	हो	ले
न	ना	ने	नो	से

थ के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। **न, ना, ने, नो** की तरह कुछ अन्य व्यंजनों का इन तीन मात्राओं के साथ पढने का अभ्यास कराइए। चारों नए शब्द पढ़वाइए — पहले पूरी कक्षा को एक साथ, फिर हर बच्चे से अलग-अलग। पालना और थन के बारे में बात कीजिए। पूछिए कि मोर किस-किस ने देखा है। उसके पंख कैसे होते हैं? वह कैसे नाचता है? तोता किस रंग का होता है? वह क्या खाता है? कहाँ रहता है? आदि।

पढ़ो

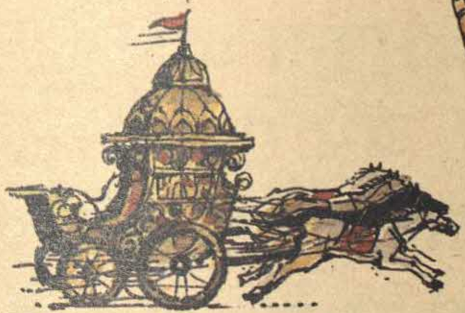
परदा पान पालक अपना पालना

रथ नथ हाथ साथ माथा

थकना दो थन चलो बेल

बोतल सोना खोलो बोलो खेलो

इनके नाम ऊपर खोजो









लिखो

प थ मा मो ता

तो जे जो हे हो

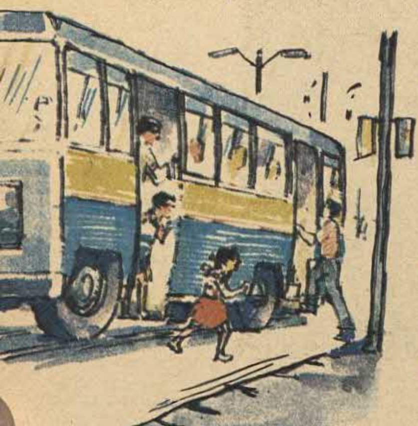
रथ पान हाथ खेलो मोर बोलो

उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें **प** और **थ** आए हैं। फिर उनको जिनमें **मो, तो** की तरह **ओ** की आवाज़ है। पिछले पाठों के कुछ अक्षरों की पहचान करवाइए। परदा, पान, पालक, पालना, नथ, हाथ, माथा और बोतल के बारे में चर्चा कीजिए। इस चर्चा के द्वारा बच्चे इन शब्दों के पढ़ने में अधिक रुचि लेंगे। नए अक्षरों को लिखवाइए। **थ** के लिखने में घुंडी पर विशेष ध्यान दिलाइए। **मो** लिखने से पहले **म** लिखाइए फिर **मा** और तब **मो**। अभ्यास किए हुए अक्षरों और शब्दों के श्रुतलेख का अभ्यास आगे भी जारी रखिए।

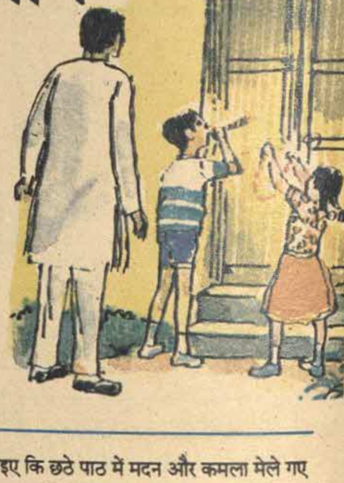
मेले से घर



कमला, मदन ।
चलो, अब घर चलो ।
देर मत करो ।
बस से घर चलो ।



वह देखो अपना घर ।
बसवाले, बस रोको ।
मदन, कमला, घर चलो ।
चलो, घर चलो ।



दरवाजा खोलो ।
देखो, मेरा बाजा देखो ।
देखो, लाल माला देखो ।

यह पाठ भी पढ़ने के अभ्यास के लिए है। इसके सभी शब्द बच्चे पहले पढ़ चुके हैं। बच्चों को ध्यान दिलाइए कि छठे पाठ में मदन और कमला मेले गए थे। उस विषय में कुछ प्रश्न कीजिए। आवश्यकता हो तो इस पाठ को कुछ बच्चों से ऊँची आवाज़ में पढ़वाइए। जिन शब्दों के पढ़ने में बच्चे कुछ कठिनाई अनुभव करें उन्हें श्यामपट पर लिखकर उनके पढ़ने का विशेष अभ्यास कराइए। पाठ के चित्रों के बारे में चर्चा कीजिए।



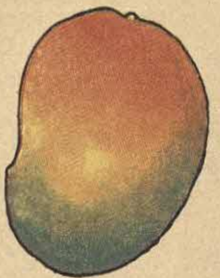
कमला, खाना खा।
मदन चल, खाना खा।
बाजा मत बजा।
अब बाजा रख दे।
पहले खाना खा।
कमला, मेरे साथ खाना खा।



मदन, अब सो जा।
कमला, माला रख दे।
अब सो जा।
कल खेलना।

पाठ के संतोषजनक ढंग से पढ़े जाने के बाद बच्चों से पूछिए: मदन और कमला कहाँ गए थे? वे घर वापस कैसे आए? मदन ने माँ को क्या दिखाया? कमला ने माँ को क्या दिखाया,कमला की माला किस रंग की थी? फिर माँ ने बच्चों से क्या कहा? चर्चा कीजिए : माँ ने बच्चों को खेलने के लिए मना क्यों किया? तुम किस मेले में गए हो। मेले में तुमने क्या-क्या देखा? मेले से तुम क्या लाए? बच्चों से माला और बाजे का चित्र बनाने को कहिए।

आ ए ग क की च ची



आम



केला



चील



गमला



कील

पहचानो

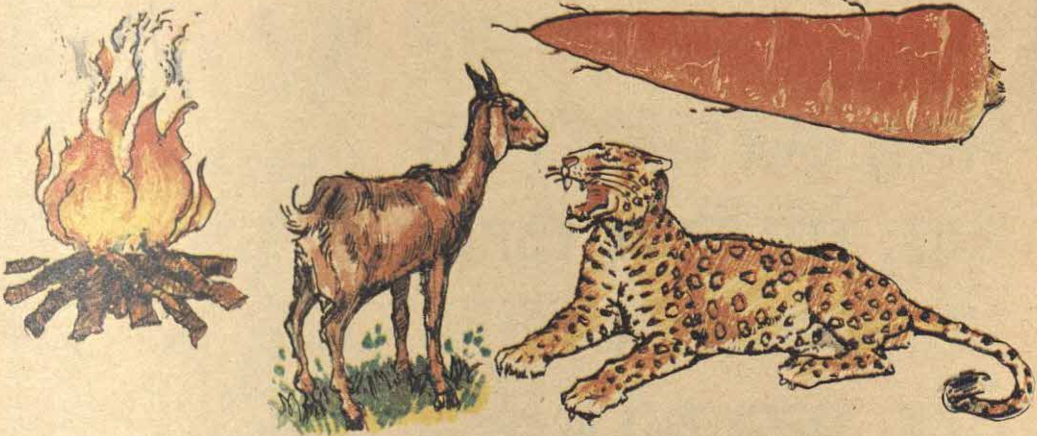
आ	ए	ग	ची	की
ए	पा	थ	थी	थे
ख	खा	खी	खे	खो
ग	गा	गी	गे	गो

अ और **आ** में समानता तथा अंतर पर ध्यान दिलाइए। बताइए कि **आ** का, **ा**, पिछला हिस्सा ही **आ** की मात्रा का काम करता है। **प, पा, ग, गा** आदि में उच्चारण के अंतर पर ध्यान दिलाइए। एक केला में एक "ए" अक्षर सिखाने के लिए है। चील और कील "ई" की मात्रा के लिए हैं। पाठ के शब्दों से घोषित वस्तुओं और पक्षी के बारे में चर्चा कीजिए। ध्यान दीजिए कि मात्राओं के क्रमिक ज्ञान के साथ बारहखड़ी का अभ्यास भी बढ़ता जा रहा है। पहचानो अंश की निचली दो पंक्तियों में मात्राओं का अभ्यास अन्य व्यंजनों के साथ कराइए।

पढ़ो

आज आम एक लाए गाजर
गाना आग बाग बाघ पीला
नीला चीनी नीचे जलेबी नीम
नदी मदारी सहेली बकरी हाथी

इनके नाम ऊपर खोजो



लिखो

आ ग ए दे पी गी
गमला आग चीनी चाची गए

नए शब्दों को क्रमशः श्यामपट पर लिखकर कार्डों पर से पढ़वाइए। अब बच्चों को पूरा शब्द एक साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। वे **आ-ज** या **आ-म** अलग-अलग न पढ़ें बल्कि आज और आम एक साथ पढ़ें। गाना, आग, चीनी, जलेबी, बाग, बाघ, नीम, नदी, मदारी, सहेली और बकरी के बारे में चर्चा कीजिए। पीले, नीले, लाल और हरे रंग की चीज़ों की ओर संकेत कराइए। **ग** और **म** तथा **र** और **ए** की बनावट में अन्तर स्पष्ट कीजिए। **ग** और **घ** की ध्वनियों के उच्चारण का स्पष्ट अभ्यास कराइए।

कमला की सहेली



मीरा, मेरे साथ चल।
आज मेरे घर चल।
माताजी, देखो, देखो।
मेरी सहेली मीरा।

मीरा, देख माला।
देख, मेरी लाल माला।
ले, माला पहन।
देख, मदन का बाजा।

छठे और सातवें पाठों में आए हुए मदन और कमला नाम के बच्चों का स्मरण कराइए और उनके विषय में प्रश्न कीजिए। इस पाठ में कमला की सहेली मीरा उसके घर आती है। ध्यान दीजिए कि जहाँ वाक्यों के बीच में अधिक अंतर है वहाँ बातचीत का प्रसंग बदल जाता है। बच्चों से ऊँची आवाज़ में पाठ पढ़वाइए।

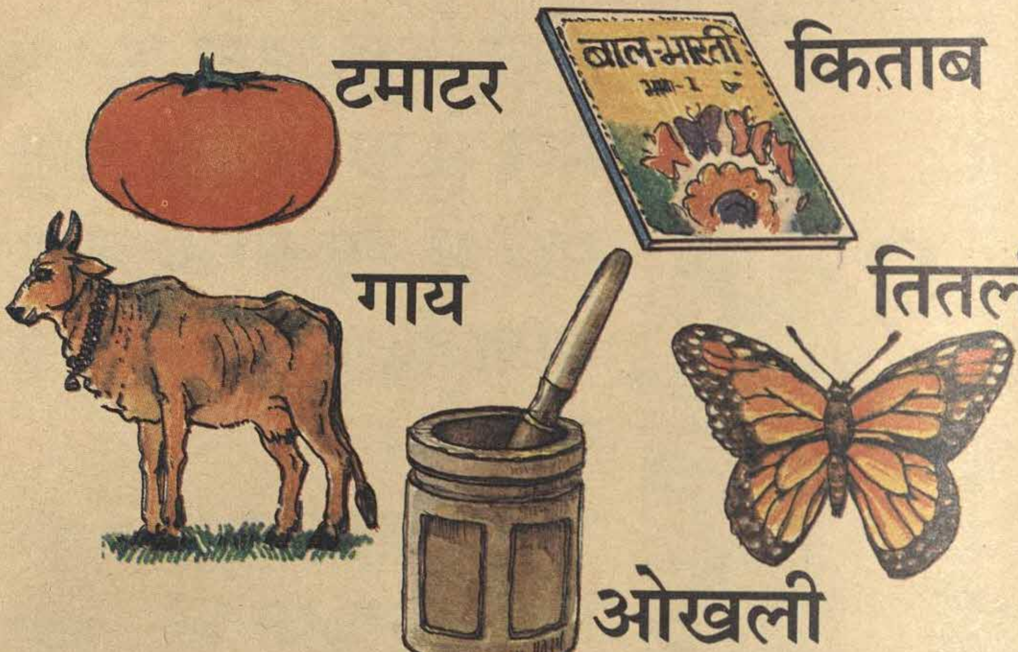
बच्चों द्वारा कई बार पाठ पढ़ लिए जाने के बाद पूछिए: कमला ने मीरा को कहाँ बुलाया? कमला मेले से क्या लाई? कमला ने मीरा को क्या-क्या दिखाया? यह भाव निकलवाइए कि अच्छे बच्चे आपस में मिलकर खेलते हैं। वे अपने खिलौने एक-दूसरे को खेलने के लिए देते हैं।



ले, बाजा बजा।
कल हम मेले गए थे।
हमने केले खाए थे।
मेले से हम माला लाए।
मेले से हम बाजा लाए।
माताजी, अब मीरा गाना गाएगी।
मीरा गाना गा।
एक गाना गा।
कमला, मीरा को आम दे।
आ मीरा, आम खा।
ले, अब आम खा।

मीरा द्वारा गाना गाने की बात को आधार बनाकर बच्चों को कुछ न कुछ सुनाने को प्रोत्साहित कीजिए। तीन बच्चों को पात्र बनाकर प्रवाह के साथ पढ़ने और बोलने के लिए प्रोत्साहन दीजिए। बच्चों द्वारा की जानेवाली उच्चारण की अशुद्धियों पर विशेष ध्यान दीजिए और उन्हें दूर करने का प्रयत्न कीजिए।

ट य ओ क कि त ति



पहचानो

ट	य	ओ		कि	ति
ए	टी	ग	य	ओ	अ
क	का	कि	की	के	को
अ		आ	ए		ओ

ध्यान दीजिए कि टमाटर में **ट** दो बार आया है। गाय में **य** अंत में है, किताब और तितली शब्द **ई** की मात्रा के लिए है। इस मात्रा का अभ्यास कुछ अन्य व्यंजनों के साथ कराइए। टमाटर के शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दिलाइए। **अ, आ** और **ओ** की बनावट के संबंध को स्पष्ट कीजिए। चित्रों की वस्तुओं और प्राणियों के बारे में चर्चा कीजिए। टमाटर किस रंग का होता है? गाय हमें क्या-क्या देती है? ओखली किस काम आती है? तितलियाँ किस-किस रंग की होती हैं? वे क्या करती हैं?

पढ़ो

टाट टहनी टोपी टोकरी रोटी
काटना याद ये गिनती गया
ओस गाओ आओ दिन सिर
किताब गिलास गिलहरी चिमटा दीया

इनके नाम ऊपर खोजो

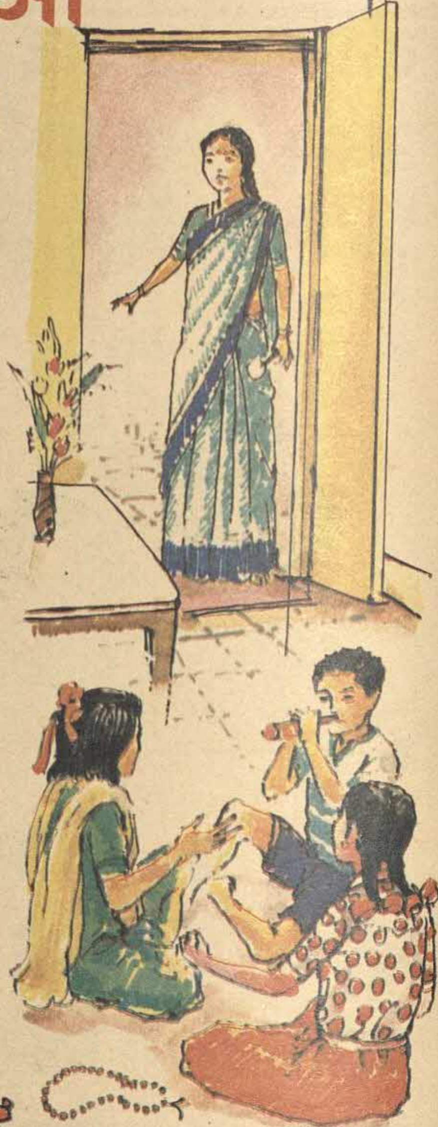


लिखो

ट य अ आ ओ ति
दो लो पि गि
दिन सिर टोपी रोटी
गाय चाय दीया ओस

टाट, टहनी, टोपी, टोकरी, रोटी, चाय, ओस, सिर, किताब, गिलास, गिलहरी, और दीये के बारे में चर्चा कीजिए। **थ** और **य**, **प** के अंतर को श्यामपट पर स्पष्ट कीजिए। **अ**, **आ**, **ओ** की बनावट में संबंध स्पष्ट कीजिए। अब आप **आ**, **ए**, **ओ** की मात्राओं की पहचान इनका नाम लेकर करा सकते हैं। ध्यान दिलाइए कि **आ** और **ओ** की मात्राएँ इन अक्षरों के पिछले हिस्सों को लेकर बनी हैं, किन्तु **ए** की मात्रा के लिए व्यंजन के ऊपर अलग से निशान (े) लगाना पड़ता है। कुछ व्यंजनों के साथ इन तीनों मात्राओं के पढ़ने और लिखने का अभ्यास कराइए।

आओ खाना खाओ



आओ, कमला आओ।
आओ, मदन आओ।
खाना बन गया।

मीरा को साथ लाओ।
आओ खाना खाओ।
साथ मिलकर खाना
खाओ।

आओ, मीरा आओ।
आओ, खाना खाओ।

बच्चों को ध्यान दिलाइए कि पाठ दस में कमला की सहेली उसके घर आई थी। उस अवसर के बारे में कुछ प्रश्न कीजिए। बताइए कि मीरा कमला के साथ खेलती रही। इतने में माताजी ने खाना बना लिया। मीरा ने कमला के साथ खाना खाया। बच्चों से पूछिए कि क्या वे भी अपने साथियों को अपने घर खाना खिलाते हैं और उनके घर खाते हैं। बताइए कि दूसरों को अपने घर खाना खिलाना बहुत अच्छी बात है। पाठ को कई बार बच्चों से पढ़वाइए। शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए।

माताजी, मीरा को दाल
चावल दो ।
लो मीरा, दाल चावल लो ।
साग लो, चटनी लो ।
मदन रोटी लो, रायता लो ।
चबा चबाकर खाना
खाओ ।



माताजी, पानी दो ।
लो कमला, पानी लो ।
यह लो पानी का गिलास ।
अब सब लोग खीर खाओ ।

बच्चों से पूछिए कि वे क्या खाते हैं और कितनी बार खाते हैं। ध्यान दिलाइए कि कमला अपनी सहेली मीरा का ध्यान रख रही है। माताजी सब बच्चों का ध्यान रख रही हैं। हमें हमेशा दूसरों का ध्यान रखना चाहिए। पहली कक्षा के बच्चे विशेषकर लड़कियाँ, खाना बनाने और परोसने से संबंधित खेलों में विशेष रुचि लेती हैं। इस पाठ को आधार बनाकर अभिनय कराइए। बच्चों से पाठशाला में एक साथ मिलकर खाना खाने को कहिए। उन्हें बताइए कि खाना खाने से पहले और बाद में अपना हाथ-मुँह धोना चाहिए।

पाठ-तेरह

इ ई उ ड क कु



इमली



ईख



उपला



डलिया



कुरता

पहचानो

इ ई उ ड कु

ट य ओ टि टु

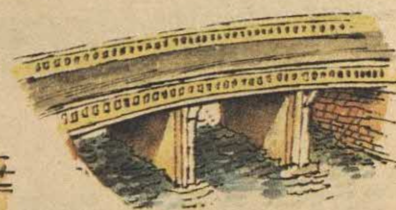
प पा पि पी पु पे पो

ड डा डि डी डु डे डो

इस पाठ में तीन स्वरों **इ, ई, उ** का प्रयोग है। **इ, ई** की मात्राएँ बच्चे पहले सीख चुके हैं। **उ** की मात्रा का प्रवेश भी इस पाठ में कराया गया है। **इ** और **ई** के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास इन दोनों स्वरों का अंतर दिखाते हुए कराइए। छोटी **इ**, बड़ी **ई** न बोलिए क्योंकि ऐसे बोलने में दोनों जगह **ई** का उच्चारण होता है और इन स्वरों के उच्चारण का अंतर स्पष्ट नहीं हो पाता। बच्चों को ईख के बारे में बताइए। यदि उपला और डलिया के लिए स्थानीय बोली में कोई अन्य शब्द प्रयुक्त होते हैं तो कहिए कि इन चीज़ों के ये नाम भी हैं। **आ, इ, ई, उ, ए, ओ** स्वरों का उनकी मात्राओं से संबंध स्पष्ट कीजिए।

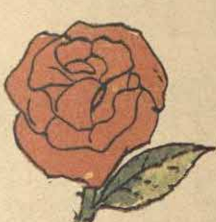
पढ़ो

इस इन इमली गई नाई ईख ईद
डाकघर उसका उजाला इनाम पुल
गुलाब जामुन बहुत पुराना हलवाई
दिन किसान पिलाना खीरा बिजली
आइए जाइए डोरी



इनके नाम ऊपर खोजो







लिखो

ड इ ई पि उ पु मु
इमली ईख आई उसका डोली
किसान ईख लाया।

इस पृष्ठ पर बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनमें **इ**, **ई** और उनकी मात्राओं का प्रयोग हुआ है। उन शब्दों को दोनों स्वरों के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करते हुए पढ़वाइए। उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें **उ** या उसकी मात्रा का प्रयोग हुआ है। फिर **ड** वाले शब्दों को चुनवाइए। नाई, डोरी, डाकघर, पुल, दुकान और जामुन के बारे में बातचीत कीजिए। लिखने के अभ्यास में पहले **ड** लिखवाइए फिर **इ** और तब **ई**। तीनों का संबंध और अंतर स्पष्ट कीजिए। **ई** के ऊपरी भाग पर ध्यान दिलाइए। बच्चे **अ** लिखना सीख चुके हैं इसलिए **उ** के लिखने में कठिनाई नहीं होगी। कुछ अक्षरों और शब्दों का श्रुतलेख करवाइए।

गाय आ गई

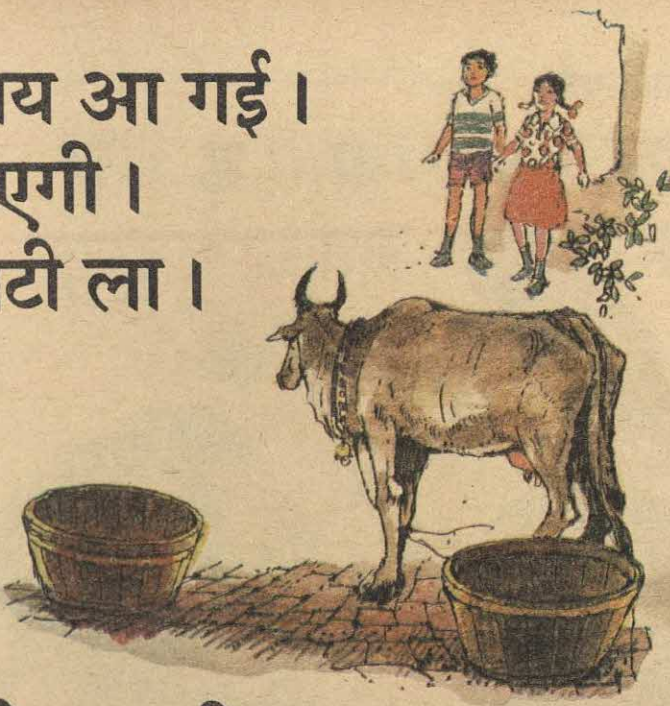


गाय आ गई ।
मीरा, देख हमारी गाय ।
गाय घर आ गई ।
यह बाहर चरने गई थी ।

आ, बाहर आ ।
गाय के पास चल ।
डर मत ।
यह गाय पिताजी लाए थे ।
पिताजी इसे कल लाए थे ।

यह पाठ गाय पर केन्द्रित है । गाँवों और कस्बों में बहुत से घरों में गाय होती है । इस पृष्ठ के संवाद कमला और मीरा के बीच हैं, अगले पृष्ठ के वाक्य माताजी के हैं । बच्चों को बताइए कि खाना खाने के बाद मीरा कमला के घर ही खेल रही थी कि इतने में गाय बाहर से आ गई ।

मदन, देख गाय आ गई।
गाय पानी पिएगी।
कमला, बालटी ला।



मदन, गाय को बालटी
से पानी पिला।
उसके लिए घास ला।
गाय के आगे घास डाल।
गाय को हरी-हरी घास
खिला।



बच्चों से पूछिए: गाय क्या-क्या खाती है? मदन ने गाय को क्या खिलाया? उसने गाय को पानी कैसे पिलाया? तुम में से किस-किस के घर में गाय है? तुम गाय के लिए क्या करते हो? गाय से हमें क्या मिलता है? और कौन-से जानवर दूध देते हैं? दूध किस-किस काम आता है? बच्चों से पशुओं के चित्र इकट्ठा करने को कहा जा सकता है।

पाठ-पन्द्रह

ऊ श ध ड़ च चू ज जू



पहचानो

ऊ चू श ध ड़
ई इ पु उ डा
ड ड़ डा ड़ा डी ड़ी डे ड़े
ध धा धि धी धु धू धे धो

इस पाठ में ऊ के साथ उसकी मात्रा भी सिखाई गई है। उ और ऊ के उच्चारण का इस प्रकार बार-बार अभ्यास कराइए कि बच्चे उन्हें अलग-अलग सुन और बोल सकें। छोटा उ और बड़ा ऊ न बोलिए। उ और ऊ की मात्राओं की बनावट में अंतर पर ध्यान दिलाए। ध और थ के अंतर पर ध्यान दिलाइए। ध्यान दीजिए कि ध अक्षर एक छोटी घुंडी के साथ लिखा जाता है। ड और ड़ में अंतर बताते हुए नीचे की बिंदी पर ध्यान दिलाइए। कुछ बच्चे ड़ की जगह र बोलते हैं और श की जगह स। शुद्ध उच्चारण के बार-बार अभ्यास से इस दोष का निवारण कीजिए।

पढ़ो

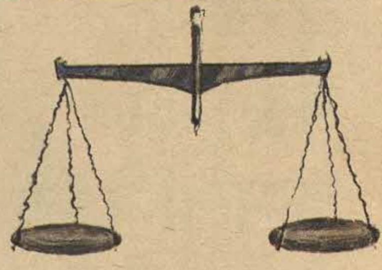
ऊन ऊपर चूहा कबूतर चाकू
तराजू जूता शरबत शाम शलगम
शोर धरती धोबी धूप गधा
पेड़ गाड़ी सड़क गुड़िया दूध
जूते पहनो। सड़क पर देखकर चलो।

इनके नाम ऊपर खोजो।









लिखो

श ध ऊ कू ड़
ऊन चूहा शेर धागा गुड़िया
शाम हुई। दूध पिओ। गाड़ी आई।

ध, **श** और **ड़** वाले शब्दों को चुनवाइए। उन-ऊन, चुना-चूना, जैसे जोड़ों को लिखकर **उ** और **ऊ** की मात्राओं को ठीक पढ़ने और इन स्वरों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराइए। ऊन, दूध, चूहा, कबूतर, शलगम, तराजू, जूता, धोबी, गधा, पेड़, गाड़ी, गुड़िया आदि के बारे में बातचीत कीजिए। लिखने में **ड** और **ड़** तथा **उ** और **ऊ** में समानता व अंतर पर ध्यान दिलाइए।

कमला की गुड़िया



कमला के पास एक गुड़िया थी। एक दिन कमला ने अपनी सहेली मीरा से कहा — मेरी गुड़िया अब बड़ी हो गई। अब इसकी शादी करनी चाहिए।

कमला ने लाल कपड़ा लिया। उसे साबुन से खूब धोया। उसके बाद कमला सुई धागा लाई। उसने गुड़िया का कुरता बनाया। मीरा ने गुड़िया की सलवार बनाई। मीरा घर से ऊनी कपड़ा लाई। उससे गुड़िया की शाल बनाई।

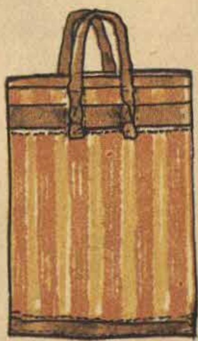
यह पाठ पढ़ने के अभ्यास के लिए है। छोटी लड़कियाँ गुड़ियों के खेल में बहुत रुचि लेती हैं। पहले पूरा पाठ स्वयं पढ़कर सुनाइए फिर बच्चों से बारी-बारी से पढ़वाइए। जिन ध्वनियों के उच्चारण में वे अशुद्धियाँ करते हैं उन पर विशेष ध्यान दीजिए। इस पाठ में पहली बार अनुच्छेद दिए गए हैं। बच्चों से पूरा अनुच्छेद एक साथ पढ़वाइए। जो वाक्य दो पंक्तियों में बँट गए हैं, उनके अभ्यास के लिए विशेष आवश्यकता होगी।

कमला ने गुड़िया को सलवार पहनाई। फिर उसने गुड़िया को कुरता पहनाया। उसे लाल माला पहनाई। मीरा ने गुड़िया के ऊपर शाल लपेटी।

कमला बोली – अब मेरी गुड़िया दुलहन बन गई। वाह, वाह। मेरी गुड़िया दुलहन बन गई।



बच्चों से गुड़ियों के बारे में चर्चा कीजिए। लड़कियों से अपनी-अपनी गुड़ियाँ कक्षा में लाने को भी कहा जा सकता है। पाठ पढ़वाने के बाद पूछिए-कमला ने मीरा से क्या कहा? उसने गुड़िया का कुरता कैसे बनाया? गुड़िया की शाल कैसी बनी? मीरा ने कमला की क्या मदद की? ध्यान दिलाइए कि अच्छे बच्चे एक दूसरे की मदद करते हैं। पूछिए कि गुड़ियों को कुरता और सलवार के अलावा और क्या-क्या पहनाया जाता है। बताइए कि अलग-अलग जगहों के बच्चे और बड़े जैसे कपड़े पहनते हैं वैसे ही वे गुड्डे-गुड़ियों को पहनाते हैं। अलग-अलग स्थानों की गुड़ियों के कुछ चित्र बच्चों को दिखाइए।





ऐनक



पैसा





थैला झाड़ू भालू

पहचानो

पै		थै		ऐ		भ		स
ऊ	श	घ	ड़	ऐ		भ		झ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो

इस पाठ में **भ**, **झ**, **ऐ**, **ै** चार नए लिपि-संकेत सिखाए गए हैं। **ए** और **ऐ** के स्वरूप में समानता व अंतर पर ध्यान दिलाइए। ध्यान दीजिए कि मानक हिन्दी में **ऐ** का उच्चारण अइ नहीं होता अपितु ऐसा होता है जैसा कि क्रमशः है और पैर शब्दों में है। बच्चों को ध्यान दिलाइए कि **ऐ** पर जैसा एक निशान है उसकी मात्रा में वैसे दो निशान लगते हैं। भारत सरकार द्वारा स्वीकृत हिन्दी वर्णमाला में **भ** और **झ** को इन्हीं रूपों में लिखा जाता है। **भ** की घुंडी और **झ** की **इ** से समानता पर ध्यान दिलाइए। **पहचानो** अंश की निचली तीन पंक्तियों में आठ स्वरों का तथा उनकी मात्राओं के साथ **भ** और **झ** का अभ्यास कराया गया है। इसी प्रकार का अभ्यास कुछ अन्य व्यंजनों के साथ कराइए। इससे पारंपरिक बारहखड़ी का भी अभ्यास होगा।

पढ़ो

ऐसा ऐनक बैल पैर पैसा लोमड़ी
भरना भाई भालू भूरा अभी मुझे
गोभी झाड़ू झाड़ी झाड़ना झूला चिड़िया
आओ, झूला झूलो। पेड़ पर चिड़िया है।

इनके नाम ऊपर खोजो








लिखो

भ झ ऐ पै थै
ऐनक पैसा झूला भालू झाड़ू
भालू नाचेगा। मेरे साथ झूलो।

अब तक बचचों में हिन्दी के सभी स्वरों, उनकी मात्राओं, अधिक प्रयुक्त व्यंजनों, तथा इनके योग से बनने वाले परिचित शब्दों के पढ़ने की योग्यता आ गई होगी, ऐसी आशा है। आप किसी पाठ को एक ही बार पढ़ाकर संतुष्ट न हो जाएँ। अपितु पिछले पाठों को बार-बार कक्षा में पढ़ाते रहें तथा उनके विषय में प्रश्न करते रहें। आगे का पाठ तभी प्रारंभ करें जब बच्चे पिछले पाठ की सभी बातें भली प्रकार सीख लें।

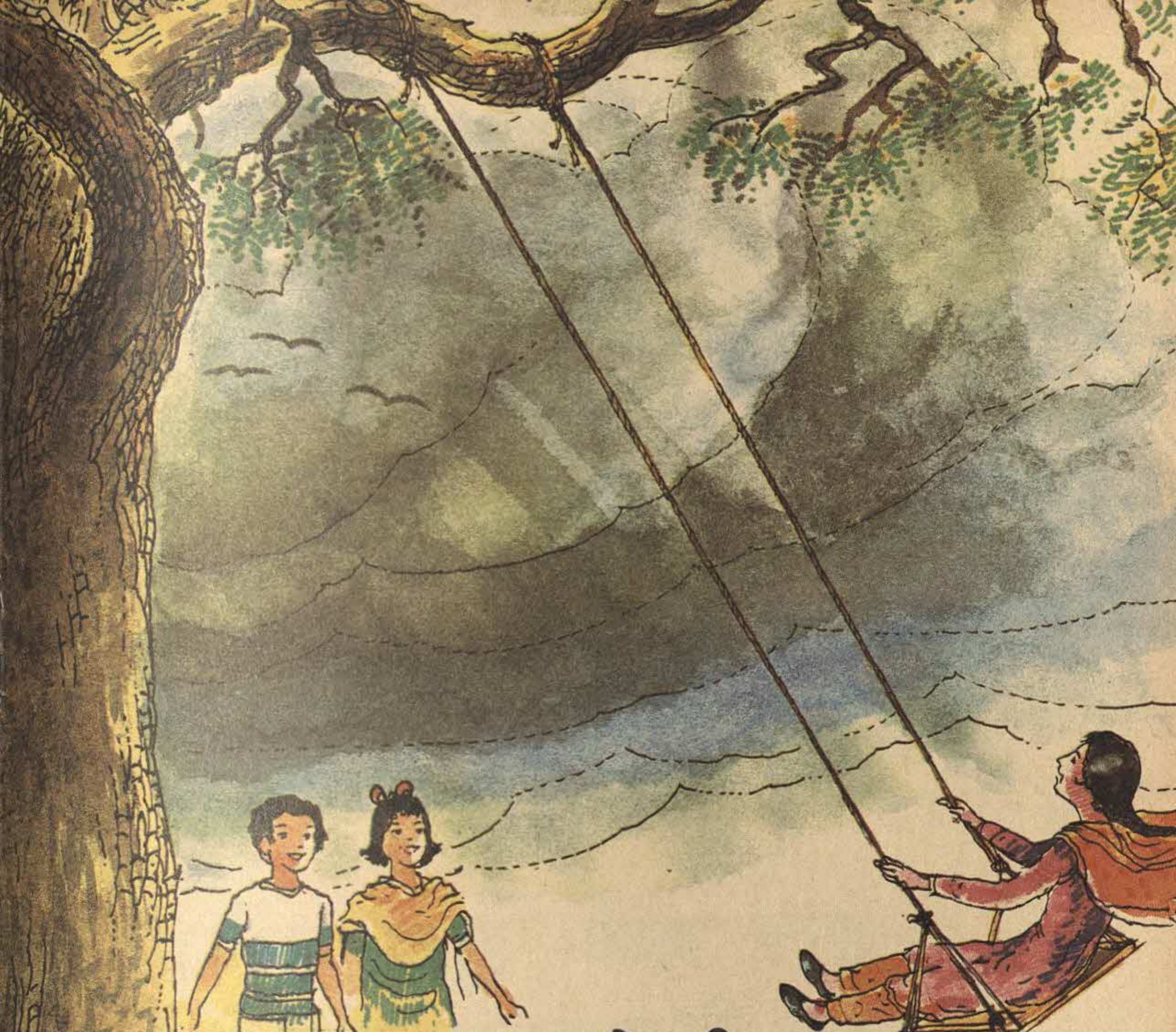
पाठ-अठारह

झूला झूलो

सावन का महीना था। बादल घिर रहे थे। सब झूला झूलना चाहते थे।

मदन के घर के आगे नीम का एक पेड़ था। मदन के पिताजी ने पेड़ पर झूला डाल दिया। कमला सलमा के घर गई। उसे बुला लाई।





वह मीरा को भी बुला लाई। सलमा का भाई रहीम भी झूला झूलने आया। पहले मदन ने सलमा को झूला झुलाया। रहीम ने कमला को झूला झुलाया।

कमला के साथ मीरा भी झूली। तब मदन के साथ रहीम झूला।
फिर कमला सलमा के साथ झूले पर बैठी। रहीम ने झुलाया। झूला ऊपर जाने लगा। सब बहुत खुश हुए।
मीरा ने गाना गाया। सलमा भी उसके साथ-साथ गाने लगी। सभी मिलकर गाने लगे।

झूला झूलो, झूला झूलो
सब मिल झूला झूलो रे।
सावन आया झूला झूलो
मिलकर झूला झूलो रे।

सभी बच्चों को झूला झूलना अच्छा लगता है। पहले झूले के बारे में बातचीत कीजिए। बच्चों से पूछिए कि क्या उन्हें झूले का कोई गीत याद है। उसे सुनाने को प्रोत्साहित कीजिए। फिर प्रस्तुत पाठ को ऊँची आवाज़ में कई बच्चों से पढ़वाइए। इस पाठ में सलमा और रहीम दो पात्र और आए हैं। ध्यान दिलाइए सभी बच्चे हिलमिलकर झूला झूलते हैं। बड़े बच्चे झूलने में छोटों की मदद करते हैं।

कई बार पाठ पढ़वाने के बाद पूछिए: झूला किन दिनों ज्यादा झूलते हैं? बच्चों को सावन के महीने के बारे में बताइए। बच्चों के लिए झूला किसने डाला? पिताजी ने झूला कहाँ डाला? मदन और कमला के साथ कौन झूलें? बच्चों को झूले का चित्र बनाने के लिए कहिए। झूले के संबंध में कोई कविता बच्चों को याद कराइए।

पाठ-उन्नीस

फ छ औ प पौ ल लौ





फल

औरत







पौधा

लौकी छाता

पहचानो

फ छ औ पौ लौ

दौ औ कौ छ फ नौ चौ सौ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ

फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ

इस पाठ में स्वर **औ**, उसकी मात्रा तथा **फ**, **छ** दो व्यंजनों का परिचय कराया गया है। **औ** की मात्रा **औ** स्वर के पिछले हिस्से से बनी है इसलिए इसे पहचानने में बच्चों को विशेष कठिनाई नहीं होगी। इस पाठ में हिन्दी की बारहखड़ी पूरी हो गई है। (ं) और (:) व्यंजनों के चिह्न हैं, स्वरों के नहीं। बारहखड़ी में वस्तुतः दस ही स्वरों का योग होता है। कुछ अन्य व्यंजनों की बारहखड़ी पढ़ने का अभ्यास कराइए।

पढ़ो

फल फाटक फूल फुलझड़ी फावड़ा
छत छाता छोटा छिपना बछड़ा
और औरत कौन दौड़ना नौकर
पौधा पकौड़ी हथौड़ा थैला सैर

इनके नाम ऊपर खोजो






लिखो

फ छ क का को कौ
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ
थैला पैर कौआ लौकी फल छाता
दौड़कर छाता लाओ। सैर करने चलो।

पौधा, पकौड़ी, फूल, छत, छाता और बछड़े के बारे में बातचीत कीजिए। फ और छ वाले शब्दों को चुनवाइए। शब्दों के पढ़ने का इतना अभ्यास कराइए कि बच्चे किसी शब्द के अक्षरों को अलग-अलग न पढ़कर पूरे शब्द को एक साथ पढ़ने लगें। ओ, औ तथा इनकी मात्राओं (ो, ौ) के उच्चारण तथा लेखन पर विशेष ध्यान दीजिए। लिखने के अभ्यास में कुछ व्यंजनों की बारहखड़ी लिखाइए।



नाच, भालू नाच ।

देखो, कौन आया ।
उधर देखो, कौन आया ।
भालूवाला, भालूवाला ।
आओ, सब आओ ।
देखो। भालूवाला आया है ।
उसके पीछे भालू है । भालू
का नाच होगा । आओ,
आओ, भालू का नाच
देखो ।

पहले भालू के तमाशे के बारे में बात कीजिए । लगभग सभी बच्चों ने यह तमाशा देखा होगा इसलिए वे इसके बारे में कुछ न कुछ बता सकते हैं । आप स्वयं पाठ को नाटकीय ढंग से पढ़ने का नमूना प्रस्तुत कीजिए और तब इसे कई बच्चों से ऊँची आवाज़ में पढ़वाइए । बाद में बच्चों से उनके बोध की परीक्षा के लिए कुछ प्रश्न कीजिए ।



भालूवाले ने डुगडुगी बजाई –
डुगडुग, डुगडुग।
मदन और कमला घर से दौड़े
आए। मीरा आई, सलमा आई।
रहीम आया और भी बहुत से लोग
आ गए।



भालूवाला बोला –

नाच, भालू नाच
मेरे भालू नाच
सबको अपना नाच दिखा तू
घूम घूमकर नाच
नाच, भालू नाच।

भालू नाचने लगा। वह नाचते-नाचते सब के पास गया। भालू मदन और कमला के पास भी गया। मदन ने अपनी जेब से कुछ बेर निकाले। उसने भालू को बेर दिए। भालू ने बेर खाए। रहीम ने भालूवाले को पैसे दिए। मीरा ने भी पैसे दिए। भालूवाले ने डुगडुगी बजाई - डुगडुग, डुगडुग।



अब तक बच्चों में हिन्दी के सभी स्वरों, उनकी मात्राओं, अधिक प्रयुक्त व्यंजनों, तथा इनके योग से बनने वाले परिचित शब्दों के पढ़ने की योग्यता आ गई होगी, ऐसी आशा है। आप किसी पाठ को एक ही बार पढ़ाकर संतुष्ट न हो जाएँ। अपितु पिछले पाठों को बार-बार कक्षा में पढ़ाते रहें तथा उनके विषय में प्रश्न करते रहें। आगे का पाठ तभी प्रारंभ करें जब बच्चे पिछले पाठ की सभी बातें भली प्रकार सीख लें।

पाठ-इक्कीस

ढ   ढ़   कंघा   बंदर



पहचानो

ढ   ढ़   फ   छ   औ   ऐ   ड

ढ   छ   ढ़   फू   ड   बै   भौ

इस पाठ में दो व्यंजनों ढ, ढ़ तथा अनुस्वार (ं) का परिचय कराया गया है। ढ और ढ़ के उच्चारण तथा लिखित रूपों में अंतर स्पष्ट कीजिए। बंदर, कंघा आदि शब्दों में अनुस्वार से आए परिवर्तन की ओर बालकों का ध्यान आकर्षित कीजिए। अन्य शब्दों द्वारा अनुस्वार (ं) के उच्चारण का अभ्यास कराइए।

पढ़ो

ढमढम ढोल ढोलक ढेला ढीला
चढ़ो सीढ़ी बढ़ो पढ़ो बढ़ई बाढ़
पंख पंजा झंडा अंदर लंबा
जंगल मंजन घंटा सुंदर खंभा

इनके नाम ऊपर खोजो

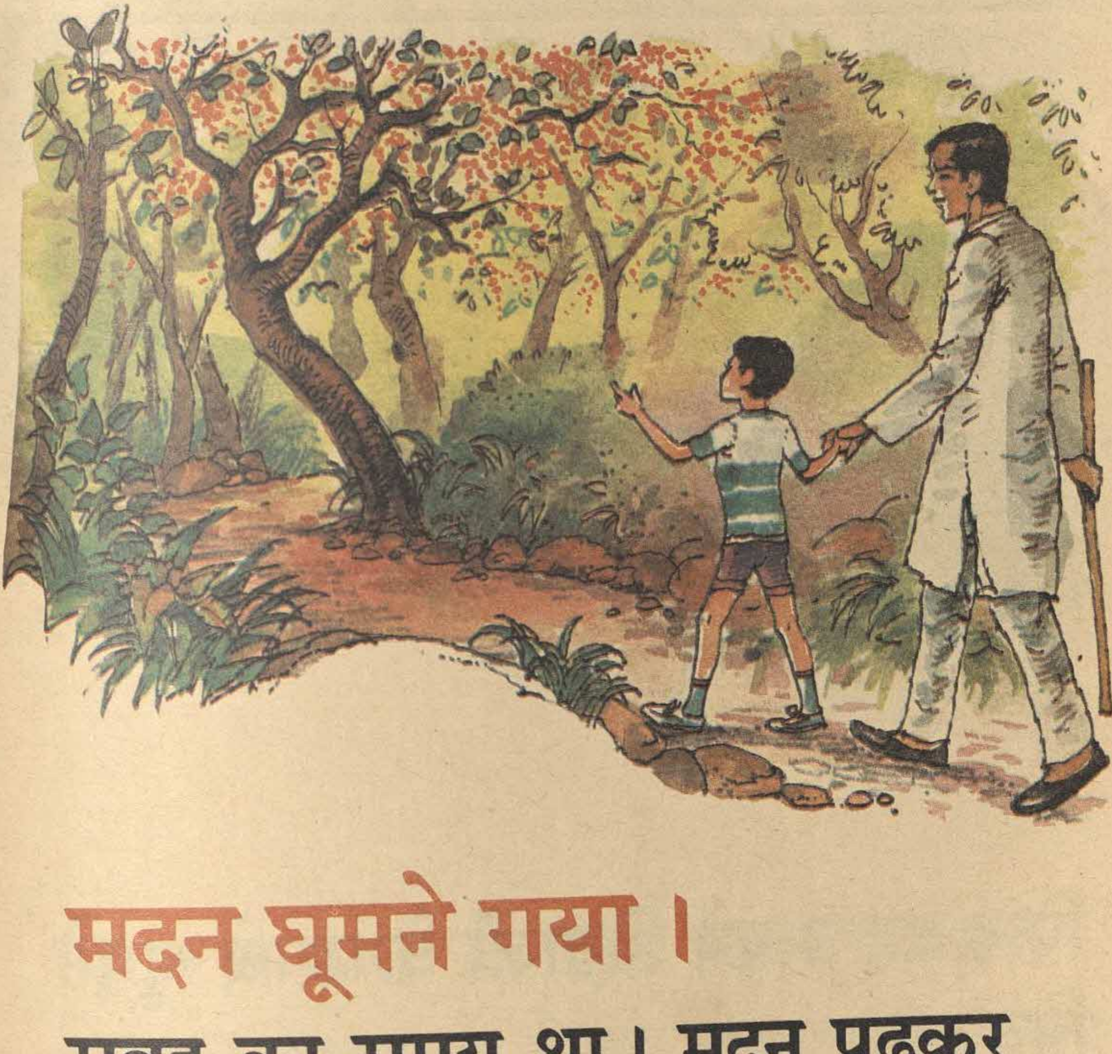


लिखो

ढ़ ढ

बंदर ने ढोल बजाया।
सीढ़ी पर चढ़ो।

"पढ़ो" के अंतर्गत दिए गए शब्दों को पढ़ने का अभ्यास कराइए। ढोलक, बढ़ई, पंख, घंटा, झंडा और मंजन के बारे में चर्चा कीजिए। ढ़ वाले शब्दों के उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दीजिए। अनुस्वार वाले शब्दों को कक्षा के सभी बालकों से अलग-अलग पढ़वाकर पूरी कक्षा में एकसाथ पढ़वाइए। इन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर बार-बार इन्हें पढ़ने का अभ्यास कराइए। ढ और ढ़ लिखना सिखाते समय ध्यान रखिए कि बालक ढ़ में नीचे का बिन्दु लगाना न भूलें।



मदन घूमने गया।

सुबह का समय था। मदन पढ़कर आया था। मदन ने दूध पिया।

बालकों से पूछिए कि वे घूमने कहाँ-कहाँ जाते हैं। क्या उनके घर के पास कोई पार्क या जंगल है? वहाँ वे क्या-क्या देखते हैं? बच्चों ने कौन-कौन से पेड़ देखे हैं? कुछ पेड़ों के नाम बताने को कहिए। यदि बालकों ने ढाक का पेड़ न देखा हो तो उसके बारे में बताइए। उन्हें ढाक का पेड़ या उसका चित्र दिखाइए। बताइए कि इस पेड़ पर लाल रंग के फूल खिलते हैं जो होली पर रंग बनाने के काम आते हैं।



फिर वह अपने पिताजी के साथ घूमने निकला।
थोड़ी दूर पर जंगल था। इधर-उधर ढाक के भी पेड़ थे। उन पर लाल रंग के फूल खिले थे।



मदन ने ढाक के एक पेड़ पर बंदर देखा। मदन ने ढेला लेकर बंदर को मारा। बंदर मदन की ओर झपटा। मदन डर गया। पिताजी ने कहा – डरो मत। उनके पास छड़ी थी। पिताजी ने बंदर को

छड़ी दिखाई। बंदर भाग गया।

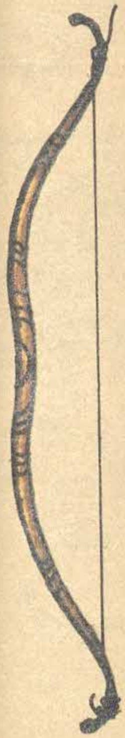
पिताजी ने मदन से कहा – किसी भी जानवर को मत मारो।

पिताजी और मदन आगे बढ़े। मदन ढाक के एक पेड़ पर चढ़ गया। उसने कुछ फूल तोड़े। वह पिताजी के साथ जंगल से घर आया। मदन ने कमला को फूल दिये। कमला बहुत खुश हुई। वह बोली – अहा, कितने सुंदर फूल। इनका रंग बहुत सुंदर है। इनसे गुड़िया के लिए माला बनेगी। मेरी गुड़िया माला पहनेगी।

बालकों से पूछिए तुमने कौन-कौन से जानवर देखें हैं? तुम जानवरों की देखभाल किस तरह करते हो? उन्हें बताइए कि कुछ जानवरों को हम पालते हैं। उन्हें पालतू जानवर कहते हैं। कुछ जानवर जंगलों में रहते हैं। वे जंगली जानवर कहलाते हैं। कुछ जंगली जानवरों के नाम बालकों को बताइए। अब कहिए : जानवर पालतू हों या जंगली, उन्हें सताना या मारना नहीं चाहिए। चिड़ियाघर के जानवरों को भी चिढ़ाना नहीं चाहिए।

पहले स्वयं पाठ पढ़कर फिर बारी-बारी से बालकों से पढ़वाइए। अब उनके बोध-ज्ञान की परीक्षा के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न पूछिए। बंदर को ढेला मारने से क्या हुआ? बंदर को छड़ी दिखाने पर क्या हुआ? पिताजी ने मदन से क्या कहा? मदन ने कौन-सी अच्छी बात की? वह बहन के लिए फूल ले गया — इस ओर बालकों का ध्यान आकर्षित कीजिए। क्या बगीचे से फूल तोड़ने चाहिए? बच्चों को बताइए — बगीचे से फूल क्यों नहीं तोड़ने चाहिए।

पाठ-तेईस



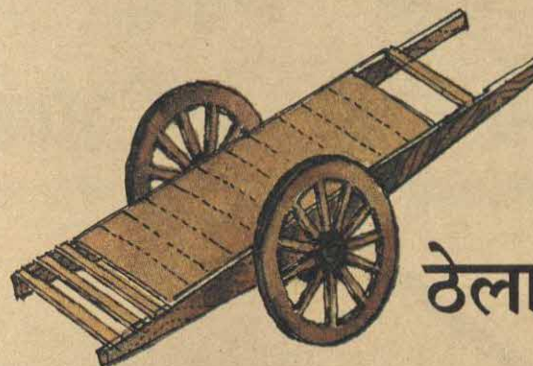
धनुष



चाँद



आँख



ठेला

पहचानो

ठ		ष		आँ		चाँ
ष	ढ़	ट	ठ	ड	ढ	ड़
हाँ	माँ	चाँ	दाँ	गाँ	आँ	साँ

इस पृष्ठ पर ठ, ष तथा अनुनासिक ँचन्द्रबिन्दु का परिचय कराया गया है। हिन्दी में श और ष का उच्चारण लगभग एक जैसा होता है। बालक अभ्यास द्वारा ही दोनों के लिखित प्रयोग की भिन्नता को समझ पाएँगे। अनुनासिक ँचन्द्रबिन्दु का उच्चारण सिखाते समय ध्यान रखें कि बालक इसका अनुस्वार (ं) से अंतर समझ जाएँ। लिखना सिखाते समय चन्द्रबिन्दु की आकृति तथा उसके निर्दिष्ट स्थान के प्रति बालकों को सचेत कीजिए।

पढ़ो

ठीक उठना लाठी आठ पाठ
पीठ बैठना ठेला हाँ माँ
मुँह वहाँ गेहूँ गाँव यहाँ
उषा धनुष सुषमा संतोष ठंडा

उषा और संतोष यहाँ आए थे।

इनके नाम ऊपर खोजो



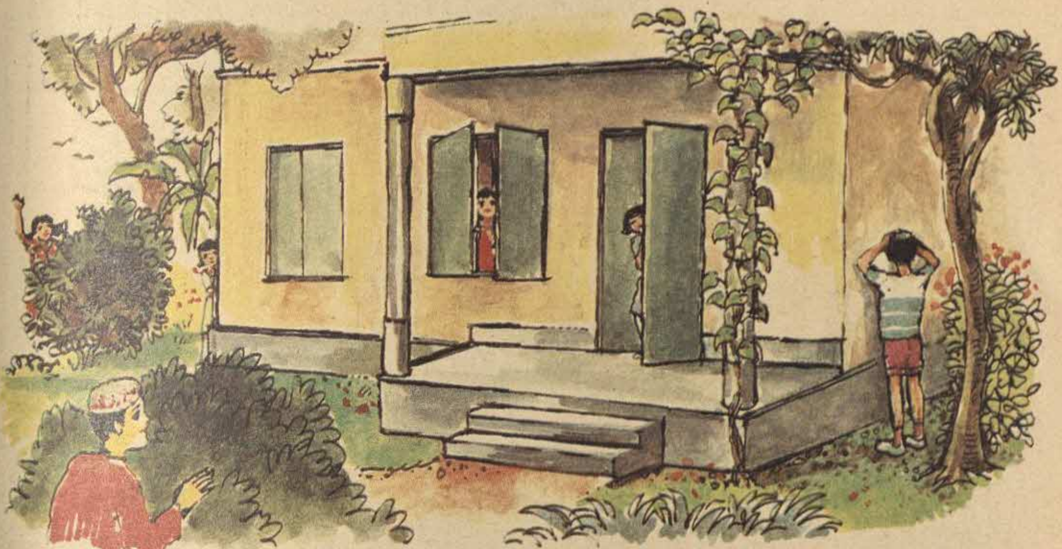


लिखो

ठ ष चौ माँ हाँ गाँ

यहाँ बैठो। सुषमा वहाँ बैठी है।
यह पंखा उषा को दे दो।
दाँत साफ करो।

लाठी, ठेला, गेहूँ, गाँव और धनुष के बारे में चर्चा कीजिए। उन शब्दों को चुनवाइए जिनमें ठ और ष का प्रयोग हुआ है। प और ष में समानता तथा अंतर स्पष्ट कीजिए। वाक्य लिखाते समय बच्चों को अंत में पूर्णविराम लगाने के लिए भी कहिए। कुछ शब्दों का श्रुतलेख लिखवाइए।



आँखमिचौनी

इतवार का दिन था। सुबह के आठ बजे थे। सलमा और रहीम खेल रहे थे।

बच्चों से पूछिए : छुट्टी के दिन वे क्या-क्या करते हैं? वे कौन-कौन से खेल खेलते हैं? क्या वे आँखमिचौनी भी खेलते हैं? (श्यामपट पर लिखिए और पढ़वाइए — आँखमिचौनी) यह खेल कैसे खेला जाता है? बालकों से प्रश्नों द्वारा निकलवाइए कि किस तरह कुछ बालक मिलकर यह खेल खेलते हैं। यह खेल घर के भीतर तथा बाहर दोनों जगह खेला जा सकता है। पाठ पढ़ने से पूर्व पाठ में आए नए शब्दों से बालकों को भली भाँति परिचित कराइए। ये शब्द श्यामपट पर लिखकर बार-बार बुलवाइए — आँखमिचौनी, ढूँढ़ो, दरवाजा, दीवार, मुँह, ढूँढ़ने।



कमला और मदन भी उनके घर खेलने आए थे। सलमा और कमला की एक सहेली थी। उसका नाम उषा था। उषा भी वहाँ खेलने आई थी। उषा का भाई मोहन भी उसके साथ आया था।

सलमा बोली – आज आँखमिचौनी खेलो।



आँखमिचौनी का खेल होने लगा। मदन चोर बना। बाकी लोग छिप गए। दूर से कमला बोली — ढूँढ़ो-ढूँढ़ो। मदन उनको ढूँढ़ने लगा। उसने दरवाजे

पहले पूरा पाठ स्वयं पढ़िए। फिर बारी-बारी से बालकों से पाठ का कुछ अंश पढ़वाइए। नए शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दीजिए। बालकों का ध्यान इस पाठ के चित्रों की ओर दिलाइए तथा उनसे पूछिए कि ये बच्चे कहाँ आँखमिचौनी खेल रहे हैं — घर के भीतर अथवा घर के बाहर। इस खेल में तुम चोर से बचने के लिए कहाँ-कहाँ छिपते हो?

के पीछे देखा। वहाँ कोई न था। उसने खाट के नीचे देखा। वहाँ भी कोई न था। अरे, तुम सब कहाँ छिपे हो? मदन बोला। सब चुप रहे।

फिर मदन ने परदे के पीछे देखा। वहाँ रहीम छिपा बैठा था।

मदन बोला - ढूँढ़ लिया।

अब रहीम चोर बना। वह दीवार की ओर मुँह करके खड़ा हो गया। सब लोग फिर छिप गए। अब रहीम उनको ढूँढ़ने लगा।

इस तरह सब देर तक आँखमिचौनी का खेल खेलते रहे।

बालकों के बोध की परीक्षा के लिए उनसे कुछ प्रश्न पूछिए। खेल के घंटे में यह खेल बालकों को खिलाइए। श्यामपट पर एक ओर घर के भीतर खेलने वाले खेल और दूसरी ओर बाहर खेले जाने वाले खेलों की सूची बनाइए। बालकों की सहायता से खेलों के नाम श्यामपट पर लिखकर फिर उनसे पढ़वाइए।

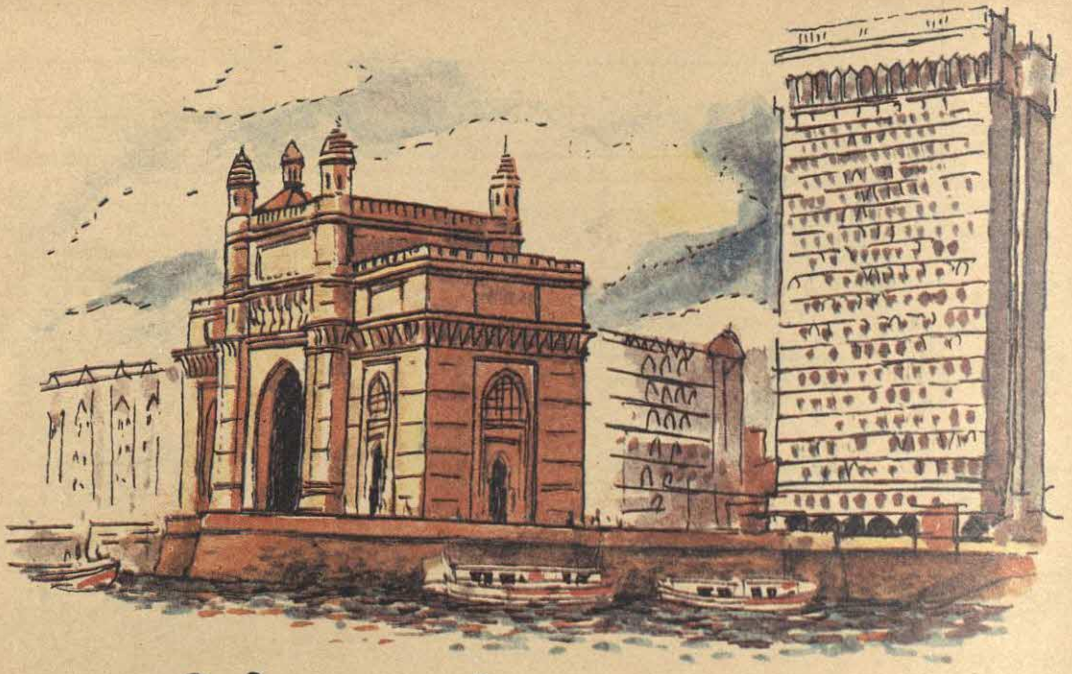
पढ़ो

थी, थीं, वही, वहीं, कही, कहीं
है, हैं, मेला, में, ईख, ईंट, मैल, मैं
गोद, गोंद, गेंद, चौका, चौंकना,
कमला बोली, माताजी बोलीं,

बंबई की सैर

मदन एक दिन मोहन के घर गया। घर में मोहन की माताजी थीं। मदन ने माताजी को हाथ जोड़े। उषा भी वहीं थी।

"पढ़ो" के अंतर्गत दिए गए शब्द पहले स्वयं पढ़िए, फिर बच्चों से पढ़वाइए। **थी-थीं, वही-वहीं, कही-कहीं** आदि शब्दों के उच्चारण में अंतर स्पष्ट कीजिए। अनुनासिक लगने से शब्दों के अर्थों में जो परिवर्तन हुआ है, उसे भी समझाइए। इसी तरह के अन्य शब्द श्यामपट पर लिखकर अनुनासिक के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाइए।



माताजी ने मदन से कहा — आओ बेटा, बैठो। तुम बहुत दिनों बाद आए हो। कहाँ थे?

मदन ने कहा — मैं बंबई गया था। वहाँ मेरे चाचाजी रहते हैं। मैं उनके पास गया था। कल ही वापस आया हूँ। माताजी, मोहन कहाँ है?

बालकों से पूछिए कि उन्होंने अपने गाँव और शहर के अलावा और कौन-कौन सी जगहें देखी हैं। क्या उनमें से किसी ने बंबई शहर का नाम सुना है? बताइए कि बंबई समुद्र के तट पर बसा हुआ बहुत बड़ा शहर है। बच्चों से प्रश्नों द्वारा निकलवाइए कि बड़े-बड़े शहरों में लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर किस तरह जाते हैं। वहाँ क्या-क्या चीज़ें मिलती है, आदि। बच्चों को समुद्र के बारे में कुछ जानकारी दीजिए।

माताजी बोलीं — मोहन अपने पिताजी के साथ कहीं गया है। अभी आ जाएगा। तुम बैठो।

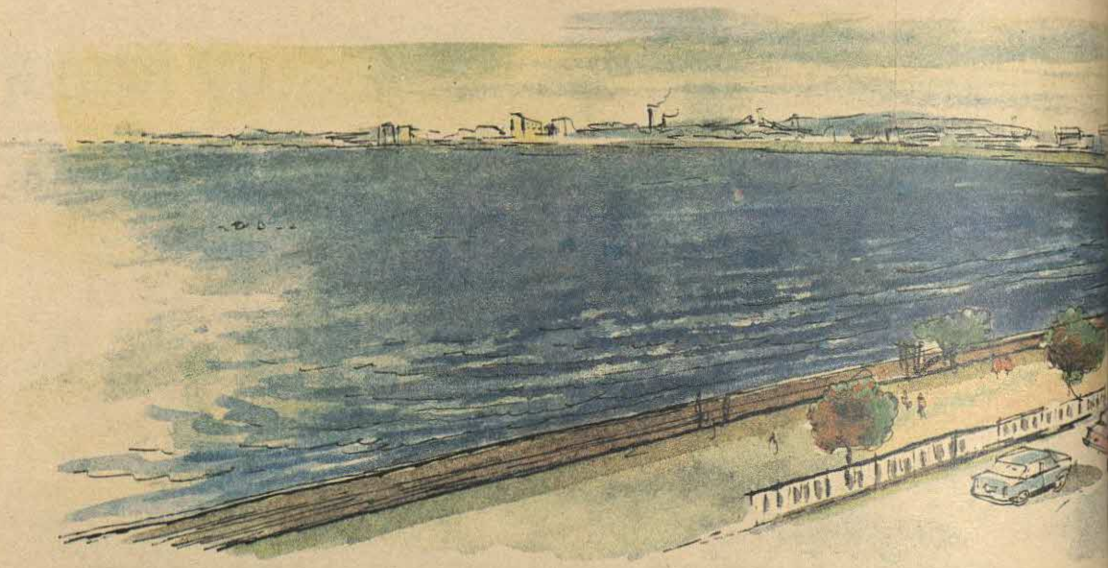
इतने में मोहन बाहर से आ गया।

मोहन ने मदन से पूछा — तुम कहाँ गए थे?

मदन बोला — मैं बंबई गया था। वहाँ मेरे चाचाजी रहते हैं।

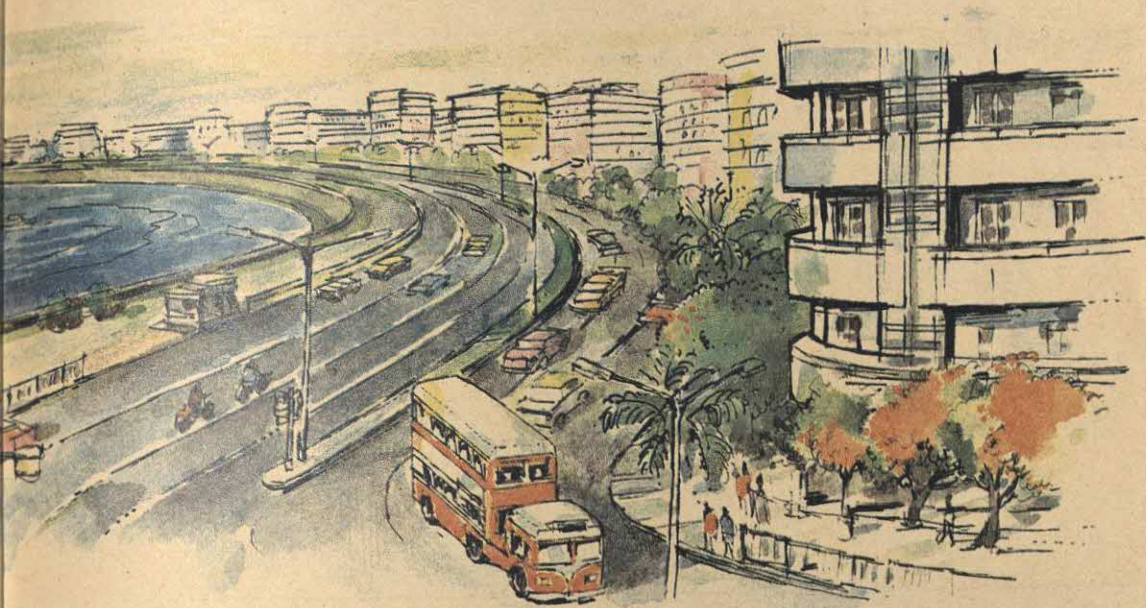
मोहन — बंबई कैसा शहर है?

मदन — बंबई बहुत बड़ा शहर है। वहाँ के बाज़ार बहुत बड़े हैं। उन में तरह-तरह की चीजें बिकती हैं। बंबई में ऊँचे-ऊँचे मकान



हैं। सड़कों पर बड़ी-बड़ी बसें चलती हैं। वहाँ बिजली की रेलगाड़ियाँ चलती हैं। मैंने वहाँ पानी के जहाज भी देखे।

यह देखो, मैं बंबई से गेंद लाया हूँ। यह उषा के लिए है।



उषा बहुत खुश हुई । वह गेंद लेकर बोली — चलो, अभी बाहर चलो । हम सब बाहर गेंद खेलेंगे ।

इस कहानी को स्वयं अभिनयात्मक ढंग से पढ़ने के पश्चात बच्चों से पढ़वाइए। बच्चों को पात्र बनाकर उनसे इसे अभिनयात्मक ढंग से पढ़वाइए। अंत में कहानी के संबंध में कुछ प्रश्न पूछिए। मदन ने माताजी को हाथ क्यों जोड़े? तुम बड़ों को कैसे प्रणाम करते हो? मोहन ने बंबई में क्या-क्या देखा? वह बंबई से क्या लाया? तुमने कौन-सा बड़ा शहर देखा है? तुम्हारे यहाँ देखने के कौन-कौन से स्थान हैं?

पाठ-छब्बीस

पढ़ो

ण, क्ष, त्र, ज्ञ

बाण, रावण, कक्षा, रक्षा,

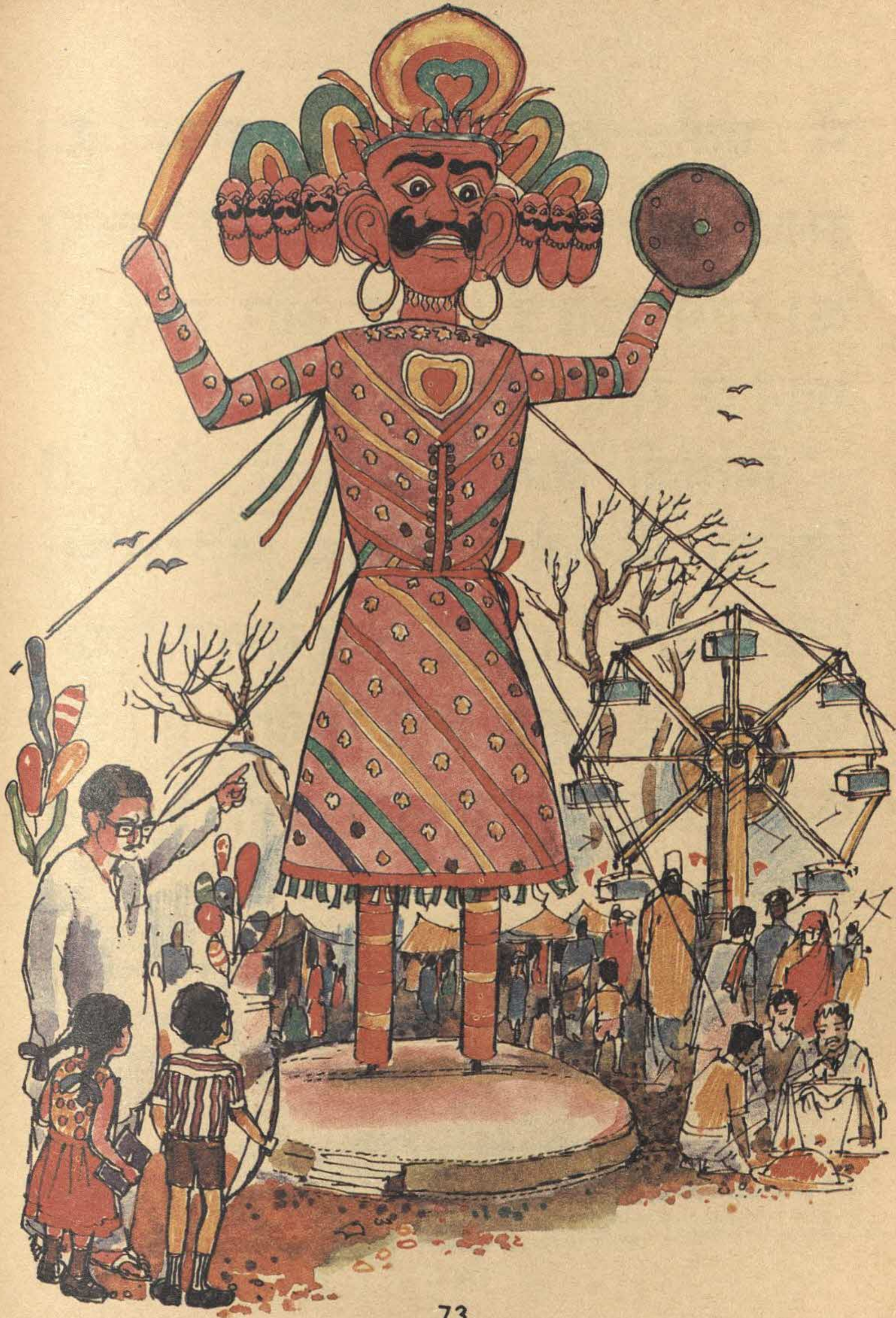
पत्र, चित्र, ज्ञान

दशहरे का मेला

आज दशहरा है। कई दिनों से रामलीला हो रही है। शहर में बहुत बड़ा मेला लगा है।

कमला और मदन पिताजी के साथ मेला देखने जा रहे हैं। मदन की कक्षा

श्यामपट पर लिखिए : **ण, क्ष, त्र, ज्ञ**। इन अक्षरों की ओर संकेत करते हुए बारी-बारी से इनका स्पष्ट उच्चारण कीजिए। अब बालकों से बुलवाइए। उनसे पूछिए : बाण, रावण — शब्दों की आखिरी आवाज़ क्या है? इसी तरह कक्षा शब्द से **क्षा** और **क्ष** ध्वनि अलग करवाकर, इसका उच्चारण करवाइए। पत्र और चित्र में "**त्र**" का उच्चारण बार-बार करवाइए। ज्ञान शब्द से शुरू की आवाज़ — **ज्ञा** निकलवाकर उससे **ज्ञ** का उच्चारण सिखाइए। अब पाठ के ऊपर लिखे अक्षर तथा शब्द फिर से पढ़वाइए जिससे बालकों को इन ध्वनियों का समुचित ज्ञान हो जाए।



में एक नया लड़का आया है। उसका नाम ज्ञान है। ज्ञान की छोटी बहन का नाम रक्षा है। रक्षा और ज्ञान भी मदन के साथ मेला देखने गए।

पिताजी बोले — देखो, मेले में कितनी भीड़ है। बहुत से लोग मेला देखने आए हैं। कुछ लोग बैलगाड़ियों पर आए हैं। कुछ बसों में आए हैं। वह देखो, रावण का पुतला। देखो, कितना बड़ा है।

मेले में बहुत सी दुकानें लगी थीं। बालक खिलौने खरीद रहे थे। कमला

पाठ पढ़ाने से पूर्व बच्चों को मेलों तथा त्यौहारों के विषय में बताइए। उन्हें छठे और आठवें पाठ का ध्यान दिलाइए जिसमें कमला तथा मदन पिताजी के साथ मेला देखने गए थे। बच्चों से पूछिए : उन्होंने कौन-सा मेला देखा है? मेले में वे क्या-क्या देखते हैं? मेले में वे क्या करते हैं? दशहरे के मेले में क्या विशेष बात होती है? इस मेले के बारे में बच्चों को बताइए।



ने राम का चित्र खरीदा। मदन ने एक धनुष लिया। उसने धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ा। बाण कुछ दूर जा गिरा। ज्ञान दौड़कर बाण उठा लाया।

पिताजी बोले — देखो, राम और रावण की लड़ाई हो रही है। वे धनुष-बाण से लड़ रहे हैं।

राम ने रावण के पुतले पर बाण चलाया। पुतले में आग लग गई। पुतला धू-धू करके जल उठा। उसमें से पटाखे छूटने लगे। सब लोग खुशी से तालियाँ बजाने लगे।

पिताजी ने सबके लिए मिठाई खरीदी। सबने मिलकर मिठाई खाई। फिर वे खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़े।



पहले पाठ स्वयं पढ़िए फिर बालकों से पढ़वाइए। पढ़ाते समय **क्ष, त्र, ज्ञ, ण** वाले शब्दों के उच्चारण की ओर विशेष ध्यान दीजिए। बच्चों से पाठ के विषय में प्रश्न पूछिए। रावण को किसने मारा? राम ने रावण को कैसे मारा। बच्चों को रामायण की कहानी सुनाइए।

हिन्दी वर्णमाला

पढ़ो और याद करो

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ

क	ख	ग	घ	(ङ)		
च	छ	ज	झ	(ञ)		
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ				

अब तक पूरी वर्णमाला से बालकों का परिचय हो गया है। यहाँ क्रम से वर्णमाला का ज्ञान कराना अपेक्षित है। बालकों से पढ़वाकर देखिए कि वे विभिन्न अक्षरों को पहचानकर उनका ठीक-ठीक उच्चारण कर सकते हैं अथवा नहीं। वर्णमाला याद करने में उनकी सहायता कीजिए। ङ और ञ का केवल उच्चारण बता दीजिए। इनके अभ्यास की विशेष आवश्यकता नहीं है। अक्षरों को बोलकर लिखवाइए जिससे बालकों को वर्णमाला का भली भाँति ज्ञान हो जाए। वर्णमाला के चार्ट अथवा कार्डों का प्रयोग कर विभिन्न वर्णों की पहचान कराइए। यह निश्चय कर लीजिए कि अब कक्षा के सभी बालकों को पूरी वर्णमाला की पहचान हो गई है।

पाठ-अट्ठाईस

पढ़ो

क्या, क्यारी, क्यारियाँ,
बच्चे, बच्चों, बच्चों ने,
क्यारियों, इन्हें, अंकुर

आओ, बगीचा लगाएँ।

एक दिन बहनजी ने कहा — बच्चो, आज हम बगीचा लगाएँगे।

बच्चे बोले — हाँ, हाँ, आज हम सब मिलकर बगीचा लगाएँगे।

इस पाठ में **क्य, च्च, च्छ, न्ह** — संयुक्ताक्षरों का परिचय कराया गया है। पढ़ो शीर्षक से दिए गए शब्दों को श्यामपट पर लिखकर बालकों को इनका शुद्ध उच्चारण करना सिखाइए। ये सभी संयुक्ताक्षर पाई या अंतिम हिस्सा हटा देने से बने हैं। अतः इन्हें लिखना और पढ़ना सुगम है। बालकों से पूछिए : क्या तुम्हारे घर में बगीचा है? उसमें कौन-कौन से पौधे लगे हुए हैं? बगीचा लगाने के लिए पहले क्या करना चाहिए? ज़मीन किससे खोदते हैं? ज़मीन तैयार हो जाने पर क्या करते हैं? खाद क्यों डाली जाती है? पौधों के बड़े हो जाने पर क्या होता है?

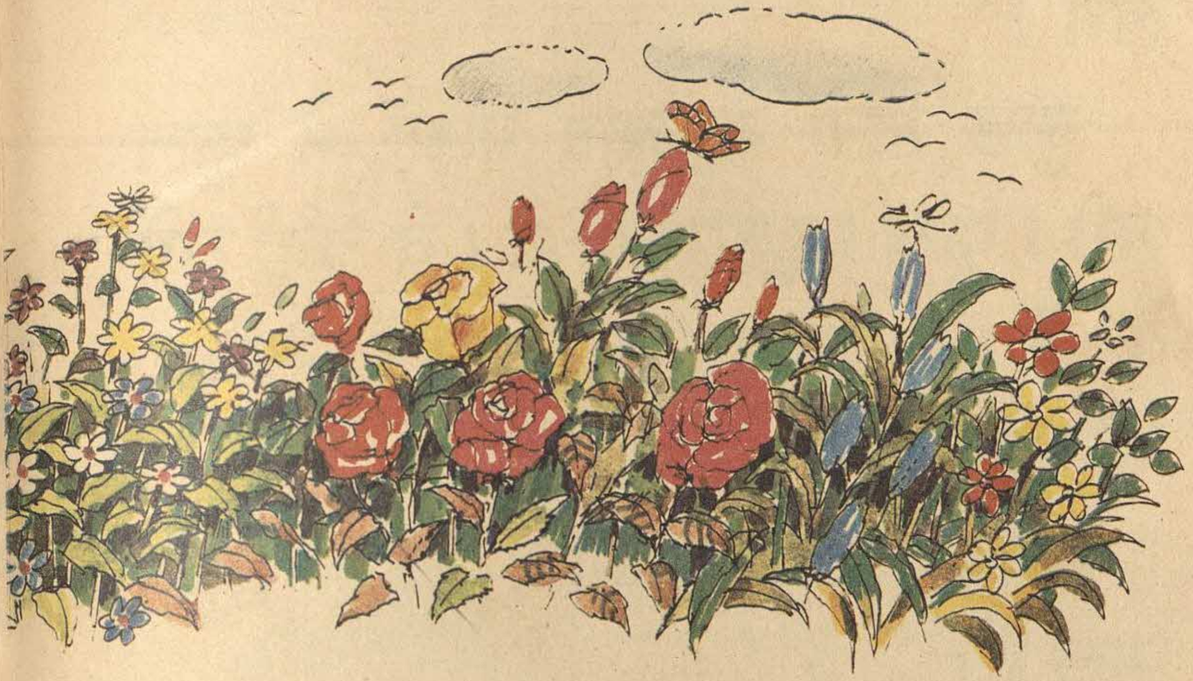


पाठशाला में कुछ खुरपे थे। बच्चों ने खुरपों से मैदान की घास खोदी। फिर मैदान में खूब पानी डाला। इससे जमीन गीली हो गई।



तब बच्चों ने खुरपों से जमीन खोदी। कमला और ज्ञान ने एक क्यारी बनाई। सलमा और संतोष ने मिलकर दूसरी क्यारी बनाई। इस तरह कई क्यारियाँ बन गईं। बच्चों ने क्यारियों में खाद डाली।

पाठ को पहले स्वयं पढ़िए फिर बालकों से पढ़वाइए। पाठ के विषय में प्रश्न पूछकर बालकों के बोध की परीक्षा कर लीजिए। बालकों से पौधों के बारे में बातचीत करते हुए उन्हें पौधे के भागों के विषय में बताइए — जड़, तना, डाली, पत्ता, फूल, फल, बीज, आदि। कुछ फूटे हुए अंकुर बालकों को दिखाइए। इस आयु के बालक प्रत्यक्ष अनुभव से जल्दी सीखते हैं अतः कक्षा में अथवा बगीचे में से जाकर पौधे के सभी भागों की जानकारी कराइए। उन्हें बताइए कि पौधों के उगने और बढ़ने के लिए धूप, हवा, पानी और खाद की ज़रूरत होती है।



बहनजी ने बच्चों को कुछ बीज दिए। बच्चों ने क्यारियों में बीज बोए। फिर क्यारियों में पानी दिया।

कुछ दिनों में बीजों में से अंकुर निकले। अंकुर धीरे-धीरे बड़े होने लगे। बच्चों ने और पानी दिया। पौधे बड़े होने

बालकों से पूछिए : उन्हें फूल कैसे लगते हैं? कुछ फूलों के नाम बताने को कहिए। बालकों से कुछ तरह के पत्ते और फूल एकत्रित करवाइए। इन्हें बालकों की अलबम में या चार्ट पर लगवाइए। फूलों और पत्तों के नाम नीचे लिखवाइए। रंगों का समुचित रूप से ज्ञान भी यहाँ दिया जा सकता है। रंगों के चार्ट द्वारा विभिन्न रंगों के नाम तथा हल्के गहरे रंगों में भेद करना भी सिखाइए।

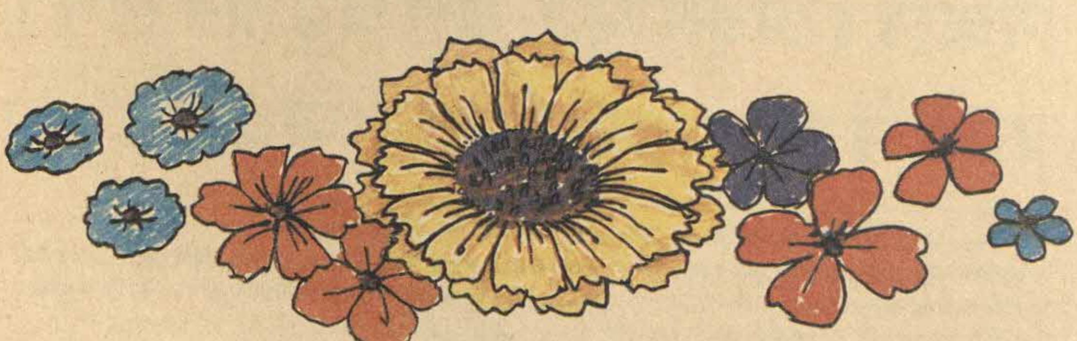
लगे।

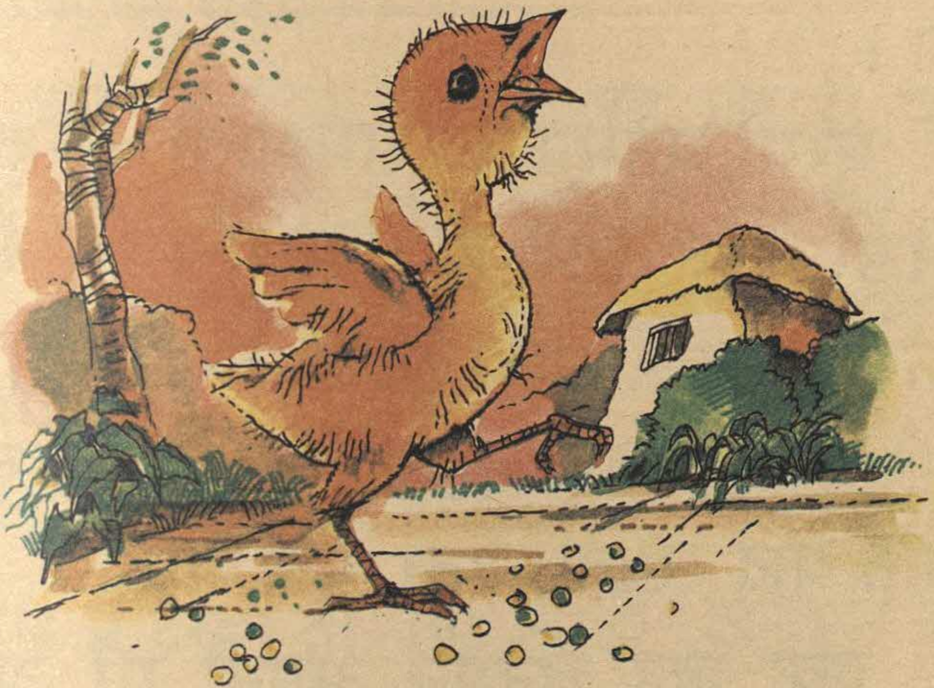
कुछ दिनों के बाद पौधों में फूल लगे। फूल बहुत सुंदर थे। वे कई रंगों के थे — लाल, पीले, नीले, सफेद, और गुलाबी।

बच्चे बोले — अहा, कितने सुंदर फूल हैं।

बहनजी ने कहा — हाँ, ये फूल बहुत सुंदर हैं। पर तुम इन्हें तोड़ना मत।

बच्चे बोले — बहनजी, हम फूल नहीं तोड़ेंगे।





चुनमुन

चुनमुन मुरगी का एक छोटा सा बच्चा था। चुनमुन रोज़ अपनी माँ के साथ घूमने जाता था। चुनमुन बड़ा नटखट था। वह अपनी माँ के बार-बार

मना करने पर भी इधर-उधर भाग जाता था।

मुरगी चुनमुन को समझाती — तुम अभी बहुत छोटे हो। साथ-साथ रहा करो। मैं तुम्हें खाना ढूँढ़ना सिखाऊँगी।

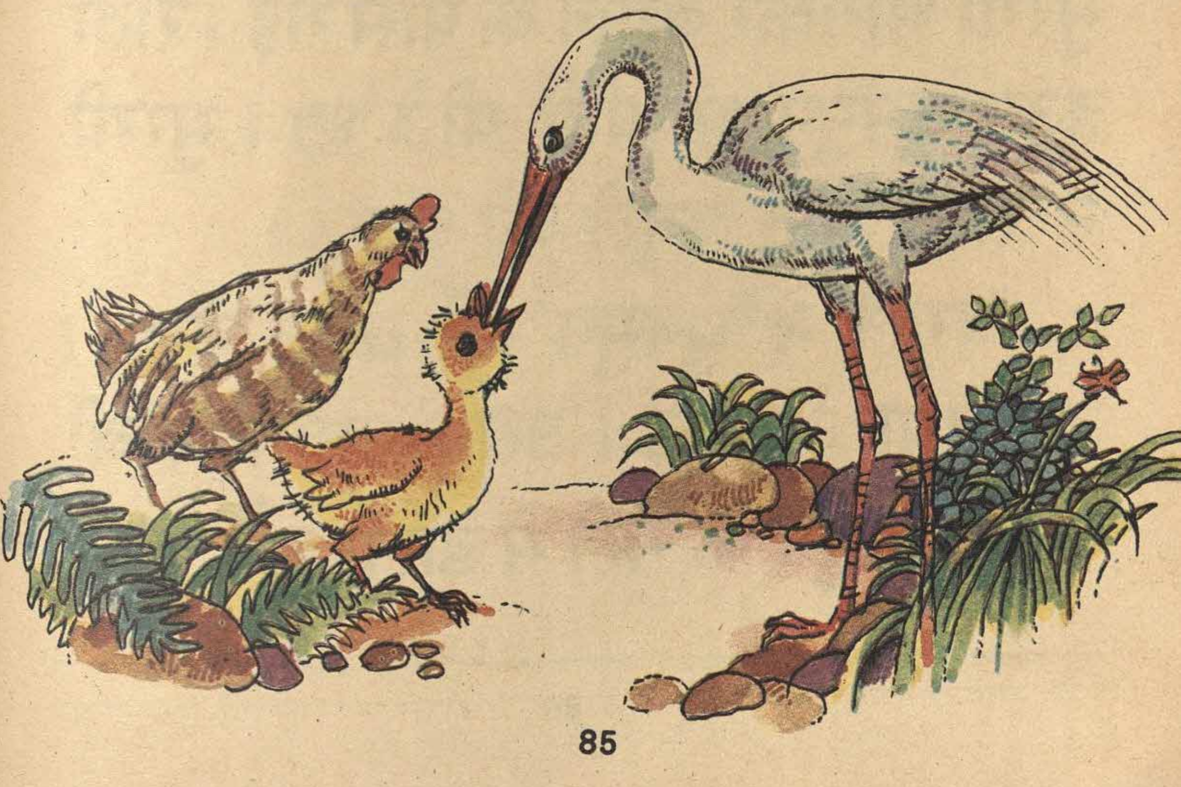
चुनमुन कुछ समय तक तो माँ की बात याद रखता, फिर भूल जाता।

एक दिन चुनमुन अपनी माँ और भाई बहन के साथ बाहर निकला। उसे एक घर के बाहर मटर के हरे-हरे छिलके पड़े दिखाई दिए। वह माँ की बात भूल गया और भागकर छिलकों के पास पहुँच गया। वह अपनी छोटी चोंच से छिलकों में से दाने ढूँढ़कर खाने लगा।

अचानक मटर का एक दाना उसके गले में अटक गया।

चुनमुन रोने लगा। वह अपनी माँ को ढूँढ़ने लगा। पर माँ उसे दिखाई न दी। घबराकर वह इधर-उधर भागने लगा।

उधर मुरगी ने चुनमुन को जब अपने साथ न देखा तो पीछे लौटी। चुनमुन रो



रहा था। उसने रोते-रोते अपना मुँह खोलकर दिखाया। मुरगी ने देखा — चुनमुन के गले में मटर का एक दाना अटका है। उसने अपनी चोंच से दाना निकालने की कोशिश की। पर उसकी चोंच छोटी थी। वह चुनमुन के गले से दाना न निकाल पाई।

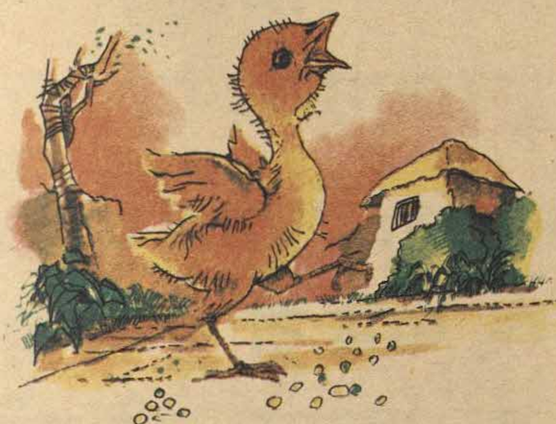
मुरगी का एक मित्र था — बगुला। मुरगी भागकर बगुले के पास गई। रोता हुआ चुनमुन भी पीछे-पीछे था। मुरगी ने सारी बात बगुले को बताई।

बगुले ने चुनमुन की तरफ देखा। उसे दया आ गई। उसने अपनी लंबी चोंच चुनमुन के गले में डाली और मटर

का दाना गले से निकाल दिया।

चुनमुन माँ से बोला — माँ मुझे माफ कर दो। मैं आपका कहना मानूँगा। बिना पूछे इधर-उधर नहीं जाऊँगा।

मुरगी ने चुनमुन के आँसू पोंछे और उसे प्यार से गले लगा लिया।



पाठ-तीस

पढ़ो

बकरी, बकरियाँ, इधर, में में, कहाँ से, वापस, तंग, पाँव, पहुँची



दो बकरियाँ

एक जंगल था। जंगल में एक नाला था। नाले के पास दो बकरियाँ रहती थीं। नाले के किनारे हरी-हरी घास

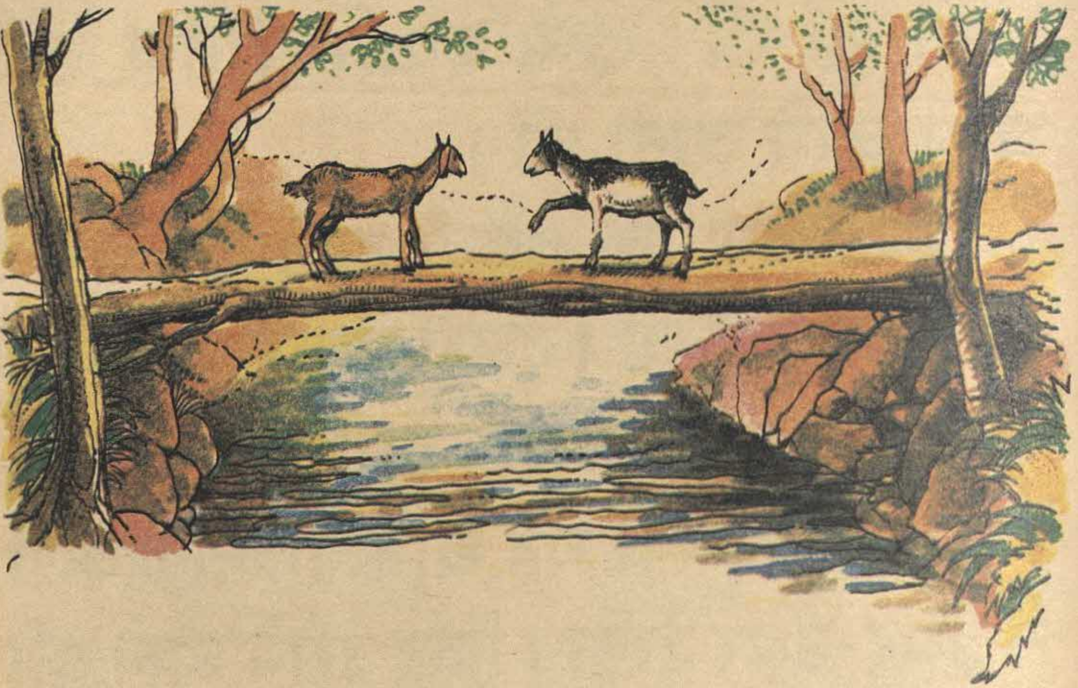
बालकों से दूध देने वाले पशुओं के बारे में बातचीत कीजिए। वे क्या-क्या खाते हैं? हरी-हरी घास खाने के लिए जानवरों को कहाँ ले जाया जाता है? उन्हें बताइए कि जो कहानी हम अब पढ़ेंगे, वह बकरियों के बारे में है। क्या तुम में से किसी ने बकरी देखी है? बकरी कैसी होती है? वह कैसे बोलती है? इस तरह बातचीत द्वारा बकरी का आकार, रंग, भोजन तथा उसकी आदतों आदि के बारे में चर्चा करते हुए कहानी में बालकों की उत्सुकता जागृत कीजिए।

लगी हुई थी। दोनों बकरियाँ रोज वहाँ घास चरने जाती थीं।

एक दिन एक बकरी नाले के किनारे घास चर रही थी। दूसरी बकरी वहाँ नहीं आई थी। वह आज दूसरे किनारे पर घास चरने चली गई थी। पहली बकरी ने इधर-उधर देखा। फिर उसने नाले की दूसरी तरफ देखा।

बकरी ने सोचा — उस किनारे की घास का रंग कितना हरा है। वह घास नरम भी होगी। क्यों न उस किनारे जाकर घास खाऊँ?

नाला गहरा था। बकरी किनारे-किनारे चलने लगी। उसने देखा, एक जगह नाले पर पेड़ गिरा पड़ा



था। पेड़ से नाले पर पुल-सा बन गया था। बकरी पेड़ पर चलकर नाला पार करने लगी।

वह नाले के ठीक बीच में पहुँच गई। तभी उसे सुनाई दिया — में में, में में। बकरी ने सिर ऊपर उठाया। अरे, यह दूसरी बकरी तो इधर ही आ रही है।

पहली बकरी ने पूछा — बहन, तुम कहाँ से आ रही हो?

दूसरी बकरी ने कहा — मैं उस किनारे गई थी। अब वापस जा रही हूँ।

पहली बकरी बोली — बहन, यह पुल बहुत तंग है। हम दोनों साथ-साथ नहीं निकल सकतीं। अब क्या करें?



दूसरी बकरी कुछ सोचने लगी। फिर वह बोली — मैं पुल पर बैठ जाती हूँ। तुम मेरे ऊपर से निकल जाओ।

पहली बकरी झट से बोली — नहीं नहीं, मैं बैठ जाती हूँ। तुम पहले निकल जाओ।

पहली बकरी पुल पर बैठ गई। दूसरी बकरी ने धीरे-धीरे पाँव उठाए। उसने अपने पाँव पहली बकरी पर रखे। फिर वह दूसरी तरफ कूद गई।

पहली बकरी उठ खड़ी हुई। वह नाले के दूसरे किनारे चली गई।

अब यह कहानी स्वयं अभिनयात्मक ढंग से पढ़िए। फिर बालकों से पढ़वाइए। इस पाठ में आए सभी नए शब्द बालक पढ़ सकते हैं। आवश्यकतानुसार शुद्ध उच्चारण तथा शब्दों के अर्थ समझने में बालकों की सहायता कीजिए।





रेल

आओ भाई, खेलें खेल,
चलती है अब अपनी रेल
हम इंजन हैं भक-भक करते,
हम डिब्बे हैं छक-छक करते।
सीटी देती चलती रेल,
कैसा बढ़िया है यह खेल।

दिल्ली जाने वाले आएँ
तनिक देर में हम पहुँचाएँ।
चाहें तो हम इसी रेल में
झटपट कलकत्ता हो आएँ।
टिकट-विकट का काम नहीं है,
लगता कुछ भी दाम नहीं है।
स्टेशन पर रुक गई रेल,
हुआ खत्म अब अपना खेल।



अगले कुछ पृष्ठों पर बच्चों की रुचि की कुछ कविताएँ दी गई हैं। इस आयुवर्ग के बच्चे कविताओं में बहुत रुचि लेते हैं। लय और तान से वे इन्हें जल्दी याद भी कर लेते हैं। इन कविताओं को पाठों के बीच-बीच जब उचित अवसर पाएँ, याद करवाइए। बच्चे इन्हें याद करें तथा उचित अंग-संचालन के साथ अकेले या समूह गान के रूप में गाएँ।

डाकिया

देखो एक डाकिया आया
थैला एक हाथ में लाया।
पहने है वह खाकी कपड़े
चिट्ठी कई हाथ में पकड़े।
बाँट रहा घर-घर चिट्ठी
मुझको दी आकर चिट्ठी
चिट्ठी में संदेशा आया

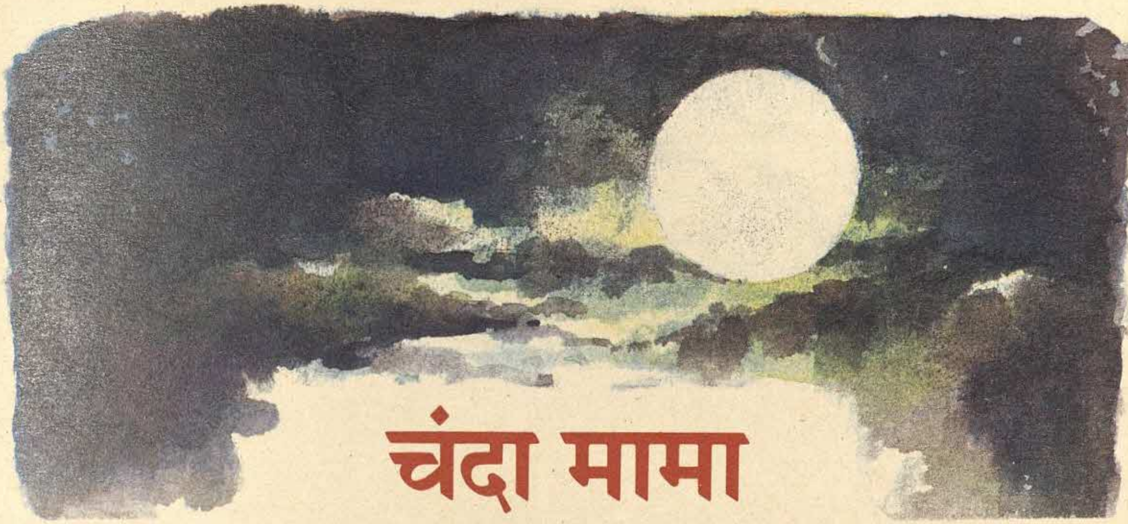


शादी में है हमें बुलाया।
शादी में सब जाएँगे हम
खूब मिठाई खाएँगे हम।



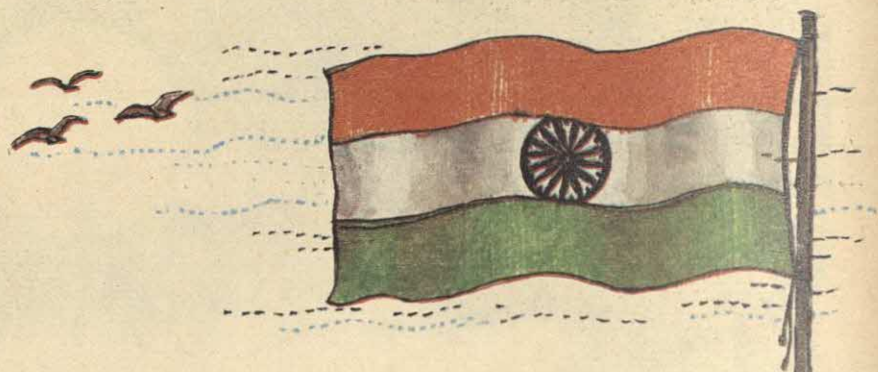
कोयल

काली कोयल बोल रही है,
डाल-डाल पर डोल रही है।
कुहू-कुहू का गीत सुनाती,
कभी नहीं मेरे घर आती।
आमों की डाली पर गाती,
बच्चों के दिल को बहलाती।
कूक-कूक कर किसे बुलाती,
क्या अम्मा की याद सताती?
यदि हम भी कोयल बन जाते,
उड़ते फिरते, गीत सुनाते।



चंदा मामा

आसमान में निकले तारे,
चंदा मामा कितने प्यारे।
सबके मन को बहलाते हैं,
नई चाँदनी छिटकाते है।
देखो इनकी शान निराली,
सूरत कितनी भोली-भाली।
रोज सवेरे छिप जाते हैं,
जैसे हमसे शरमाते हैं।
आओ चंदा मामा आओ,
अपने घर की बात सुनाओ।



झंडा

तीन रंग का अपना झंडा,
हम झंडा फहराते हैं।
इसे तिरंगा कहते हैं हम,
इसका गाना गाते हैं।
इसे देखते हैं जब हम सब,
कितने खुश हो जाते हैं।
इस झंडे को हम सब बच्चे
अपना शीश झुकाते हैं।



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING